पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5112, फरवरी, 2011

हिन्दुत्व पर प्रहार

तुष्टिकरण की राजनीति

ॐ

मातृवन्दना की वेबसाईट का शुभारम्भ

With Best
Compliments from

Dussehra
Festival Committee, Kullu

District Kullu, Himachal Pradesh

Khimi Ram, MLA
Cum-Chairman, Dussehra Festival
Committee, Kullu.

B.M. Nanta, IAS
Deputy Commissioner
Cum-Vice-Chairman
Dussehra Festival Committee
Kullu.

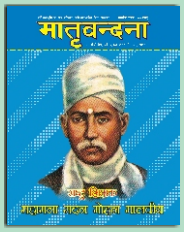

मातृवन्दना
मासिक

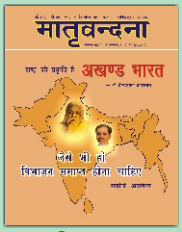

सदस्यता अभियान 2011-2012
1-15 फरवरी 2011

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नव वर्ष का आकर्षक क्लैंडर नि:शुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
प्रबन्धक, **मातृवन्दना**
मातृवन्दना भवन, नया शिमला - 171009
दूरभाष : 0177-2671990 फैक्स : 2670071
email: matrivandanashimla@gmail.com

वार्षिक शुल्क 60 रुपये
पांच वर्षीय 250 रुपये

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

इस अंक में

पूर्वे वयसि तत्कुर्याद्येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवेन तत्कर्याद्येन प्रेत्य सुखं वसेत्॥

अर्थात् पहली अवस्था में वह कार्य करे जिससे वृद्ध होकर सुख पूर्वक रह सके और जीवन पर्यन्त वह कर्म करे जिससे मर कर परलोक में सुखपूर्वक रह सके।

वर्ष : 11 अंक : 01

मातृवन्दना

मासिक

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द
5112, फरवरी, 2011

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

प्रबन्धक
नरेन्द्र कुमार

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया
शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

हिन्दू आतंकवाद का फोबिया.....8

अपना राजनीतिक भविष्य तलाश रहे कांग्रेस के महामंत्री दिग्विजय सिंह को भी 'हिन्दू आतंकवाद' का फोबिया हो गया है। संघ जैसी राष्ट्रवादी शक्तियों को देशद्रोही हिंसक आतंकी गुटों में शामिल करने के कांग्रेसी अभियान का झंडा उठाए हुए दिग्विजय सिंह को वास्तव में न तो हिन्दुत्व की गौरवशाली परम्पराओं का ज्ञान है और न ही हिंसक आतंकवाद की पृष्ठभूमि की जानकारी है।

सम्पादकीय	संघ और हिन्दुओं ने कभी आतंक का आश्रय नहीं लिया	5
प्रेरक प्रसंग	कोई ऊंचा-नीचा नहीं	6
चिन्तन	विश्व दर्पण में भारतीय संस्कृति	7
देवभूमि	सेवा भारती ने एम्बुलेंस सेवा का शुभारम्भ किया	13
संगठनम्	शिक्षा को राजनीति में न घसीटें	15
देश-प्रदेश	संस्कृत और संस्कृति का संगम	17
घूमती कलम	स्वामीनारायण 'अक्षरधाम'	18
विविध	विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करने की साजिश रच रही है	20
दृष्टि	अनाथ बच्चियों का मसीहा	21
काव्य-जगत	आजादी कैसे पाई जाती है?	22
महिला जगत	नारी : प्रेम और वात्सल्य का बेजोड़ स्तम्भ	23
स्वास्थ्य	दिशा ज्ञान और स्वास्थ्य	24
प्रतिक्रिया	संघ पर निशाना-कांग्रेस का भीतरी डर	25
पुण्य स्मरण	एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल जी	26
समसामयिक	सैक्युलरवादियों के दोगलेपन का ताजा शिकार न्यायपालिका	28
कृषि	ग्वारपाठा की खेती में है मुनाफा	30
विश्व दर्शन	कम्बोडिया, लाओस और भारत	32
बाल जगत	ऐसी हिम्मत वाली मनु थी	33

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

अब हिन्दुओं पर आतंकवादी होने के आरोप लग रहे हैं। हिन्दू धर्म पर संकट घिरे हैं लेकिन हिन्दू आतंकवाद के नारे लगाने वालों का क्या? इनकी छाया में अफजल गुरु और कसाब पल रहे हैं। हिन्दुओं की भावनाओं और आस्थाओं का छद्म धर्मनिरपेक्ष नेता दमन कर रहे हैं। मेरे देश की जनता क्यों सोयी हुई है? क्यों इन नेताओं के मोह में खोई हुई है। मातृवन्दना द्वारा ऐसे षड्यंत्रों का पर्दाफाश कर मुंहतोड़ जवाब दिया जाना चाहिये।

– **विवेकदीप शर्मा**, हमीरपुर

देश की विषम परिस्थिति में आज प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने महान राष्ट्र की विरासत को समझे व समझाए। भ्रष्टमंडल की सरकार राष्ट्रवादी ताकतों को बदनाम करने का षड्यंत्र क्यों, किस लिये, किसे संकेत पर कर रही है। इस विषय पर हम सबको संघर्ष करना होगा। संगठन शक्ति से अराष्ट्रीय सरकार को हटाया जा सकता है। तुष्टीकरण की राजनीति से राष्ट्रघात किया जा रहा है। भारतवर्ष सनातन राष्ट्र है। हमारी संस्कृति सनातन है। सनातनता में रूढिवादिता नहीं अपितु नव नुतन संस्कृति पुटपित-पल्लवित होकर, विश्व को आप्लावित कर चुकी है। मुगल आक्रमणकारी थे। हमारे देवालयों, विद्यामंदिरों को नष्ट किया गया। किन्तु हिन्दू राष्ट्र की सनातनता को नष्ट नहीं कर सक। साधु संतों के नेतृत्व में हनुमत शक्ति जागरण समिति राष्ट्र में सोती शक्ति को जगा रही है। आवश्यकता है राष्ट्रवादी साहित्य गांव-गांव, जन-जन ही नहीं अपितु विश्व स्तर का पहुंचे।

– **प्रदीप**, कानपुर

मातृवन्दना पत्रिका पिछले 14 वर्षों से हिमाचल में हर वर्ग तक अपने विचार पहुंचाकर एक जागरुक प्रहरी की भूमिका निभाने का कार्य कर रही है। मातृवन्दना में प्रेरक प्रसंग, देवभूमि, खेल, समसामयिक, बाल जगत स्तम्भों में प्रेरक सामग्री होती है जो हरेक परिवार में शौक से पढ़ी जाती है।

– **केएस कौंडल**, ऊना

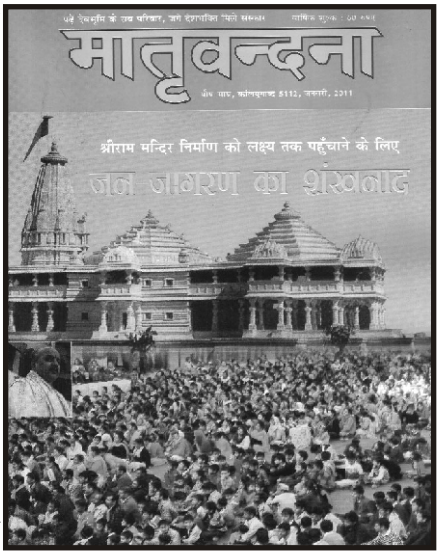

सेवा

पर-सेवा सम धर्म न भाई।
सेवा कर लो मन-चित लाई।।
नि:सहायों की सेवा करना।
पुण्यों से तुम झोली भरना।।
माता-पिता की सेवा कर लो।
जीवन अपना सुख से भर लो।।
सेवा कभी व्यर्थ न जाती।
यह तो है मोक्ष दिलाती।।
'कर सेवा, खा मेवा' बात पुरानी।
सेवा की है अमर कहानी।।
बनकर सेवक कर्म कमाना।
प्रभु अपने को खूब रिझाना।।

– **रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'**, सिहाल कांगड़ा

पाठकों से निवेदन

प्रिय पाठक बन्धु/भगिनी,

सप्रेम जयश्रीराम!

इस वर्ष का यह अंतिम अंक आपके हाथों में है। इस अंक के साथ ही पिछले वर्ष का शुल्क समाप्त हो जाएगा। आगामी वर्ष के लिये सदस्यता अभियान चल रहा है। आपका शुल्क जमा हो चुका होगा, ऐसा विश्वास है। किसी कारण से जमा नहीं हुआ है तो शीघ्रातिशीघ्र अगले वर्ष के लिये अपना शुल्क नजदीकी कार्यकर्ता के पास जमा करवा दें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें। हर वर्ष की भांति इस बार भी आपका पूर्ण सहयोग मिलेगा, इसी आशा के साथ।

आपका

प्रबंधक

स्मरणीय दिवस (फरवरी)

बसंत पंचमी	8 फरवरी
गुरु रविदास जयंती	18 फरवरी
स्वामी दयानंद जयंती	27 फरवरी
श्रीगुरु गोलवलकर जयंती	28 फरवरी

संघ और हिन्दुओं ने कभी आतंक का आश्रय नहीं लिया

लोकतंत्रात्मक प्रणाली में राजनीति का अर्थ है, 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' अर्थात् ऐसी राजनीतिक व्यवस्था जिसमें देश के प्रत्येक नागरिक के हितों की रक्षा हो और समस्त जनता की सुख सुविधा एवं शांति के लिये सतत् प्रयास किये जाते हों। वर्तमान में यदि देखें तो राजनीति केवल सत्ता का पर्याय बनकर रह गई है। राजनीतिक दल केवल इसलिये राजनीति करते हैं कि किसी न किसी प्रकार सत्ता प्राप्ति हो। सत्तारूढ़ दल यही राजनीति करता है कि सत्ता बनी रहे। वह जब देश की गम्भीर समस्याओं को निपटाने में अक्षम हो जाता है और वे समस्याएं जब विकराल रूप धारण कर लेती हैं तो वह अपनी अकर्मण्यता और असफलताओं को छिपाने के लिये और मूल समस्याओं से आम जनता का ध्यान हटाने के लिये कूटनीति का आश्रय लेता है। सत्ताधारी दल मीडिया के माध्यम से उन विरोधी दलों के विरुद्ध जो उसकी नीतियों का विरोध कर रहे हैं, ऐसे घटनाक्रम व विषयों का बढ़ा चढ़ा कर प्रचार करता है कि विरोधी दल पस्त हो जाएं और आम जनता भी अपनी मुसीबतों को भुलाकर नए उत्तेजनात्मक विषयों की ओर आकर्षित हो जाए। कमोबेश विपक्षी दलों का भी यही प्रयास रहता है कि सत्तारूढ़ दल को राज सिंहासन से उतार कर कैसे उस पर काबिज हुआ जाए।

यह देश की आम जनता का दुर्भाग्य है कि इस समय देश को चला रही यूपीए सरकार भ्रष्टाचार और घोटालों में इस कदर सराबोर हो चुकी है कि अपने बचाव के लिये उसके पास कुछ भी कहने को नहीं। गठबंधन सरकार का अपने घटक दलों के मंत्रियों पर कोई नियंत्रण न रहने से और उनकी निरंकुशता से उसकी अपनी छवि इतनी धूमिल हो चुकी है कि वह अब अपनी खीज मिटाने के लिये देश के प्रमुख राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अनावश्यक रूप से बदनाम करने पर तुली हुई है। 'हिन्दू आतंकवाद' का शगूफा छोड़ कर स्वामी असीमानन्द के बयानों का सहारा लेकर संघ को आतंक के दायरे में घसीटने का प्रयास किया जा रहा है। दो-चार ऐसे शख्स जिन्होंने संघ की नीतियों से असंतुष्ट हो स्वयं को अलग कर दिया था यदि असीमानन्द स्वामी के सहयोगी बनकर तथाकथित बम काण्ड में फंस चुके हैं या फंसाए जा रहे हैं तो इसे संघ को बदनाम करने की ही साजिश माना जाएगा। स्वतंत्र भारत में संघ ने और हिन्दुओं ने कभी भी आतंक की राजनीति का आश्रय नहीं लिया है, यह बात सब जानते हैं। संघ प्रमुख भागवत ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि संघ में कट्टरवाद के लिये कोई स्थान नहीं। सरकार द्वारा भ्रष्टाचार तथा जानलेवा मंहगाई के दोहरे मुद्दों से ध्यान हटाने के लिये जो 'हिन्दू आतंकवाद' का झूठ खुला छोड़ दिया गया था उससे उसे कोई लाभ नहीं मिल पाया। आम जनता समझ चुकी है कि 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में ए. राजा ने देश का कितना धन अपनी और अपनी चहेती कम्पनियों की जेब में डाल दिया है। दूरसंचार मंत्री कपिल सिब्बल कैग के सम्बंध में चाहे कितनी ही तकनीकी खामियां निकालें और ए. राजा के कार्य को सही ठहराने का स्पष्टीकरण दें, उसे न सर्वोच्च न्यायालय मान रहा है न ही आम जनता स्वीकार कर रही है। बोफोर्स घोटाला पुन: उभर कर सामने आ गया है जिसका सीधा मुख कांग्रेस दल के मुखिया की ओर मुड़ा हुआ है। आदर्श घोटाले से सत्तारूढ़ दल ने अपना आदर्श स्थापित कर दिया है। गरीबों के अनाज को बेचने के घोटाले अभी सामने आने वाले हैं। महंगाई सुरसा के मुंह की तरह निरंतर बढ़ती जा रही है। कांग्रेस को आशा थी कि स्वामी असीमानन्द व कुछ गुमराह हिन्दू उग्र युवाओं को कारागार में डालकर मुसलमानों के विश्वास को प्राप्त कर लिया जाएगा। वह भी सम्भव नहीं हो सका। उल्टे बहुसंख्यक समुदाय को नाराज करने की भूल कांग्रेस ने अवश्य कर दी है। ❑

प्रेरक प्रसंग

कोई ऊंचा नीचा नहीं

1950 में पुणे के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिक्षा वर्ग का प्रसंग है। 1300 के आसपास स्वयंसेवक थे। भोजन के समय जलेबी भी बनाई गई थी। उसके वितरण की अधिकारी वर्ग की देखरेख में योजना बनी। श्री मोरोपंत पिंगले, श्री सीताराम पंत, अभ्यंकर आदि अन्य अधिकारी निरीक्षण कर रहे थे। संघ के द्वितीय सरसंघचालक (श्रीगुरु जी) माधव राव सदाशिव गोलवलकर उनके पीछे-पीछे थे। कई स्वयंसेवकों का नाम लेकर आग्रहपूर्वक उन्हें खिला रहे थे।

जब श्रीगुरु जी सहित अधिकारी भोजन के लिये बैठे तो दूसरी पंक्ति में अधिकारी वर्ग भोजन के लिये बैठा। आठ-नौ स्वयंसेवक वितरण करने लगे तो एक स्वयंसेवक वितरण न करके, वैसे ही बैठा रहा। श्रीगुरु जी का ध्यान उसकी तरफ गया। भोजन शुरू होने के पूर्व ही वे उसके पास गए और कहा- तू कैसे बैठा है? वितरण करो।

उस स्वयंसेवक को बहुत संकोच हो रहा था। वह नारायण 'चर्मकार' था, इसलिये संकोच कर रहा था। जब उसने श्रीगुरु जी को बताया तो गुरुजी को बहुत खराब लगा। गुरुजी ने उसका हाथ पकड़ के जलेबी की थाली हाथ में दी। सर्वप्रथम अपनी थाली में परोसने को गुरुजी ने कहा, फिर सब स्वयंसेवकों को देने के लिये कहा। यह प्रसंग है छोटा परन्तु जीवन भर याद रहेगा, एक अत्यंत कठिन समस्या का अत्यंत सरल समाधान अपने आचरण से देने वाला। ❑

बालिका ने प्राण त्यागकर सिखाया अतिथि सत्कार

मेवाड़ के गौरव महाराणा प्रताप उन दिनों अरावली के वनों में भटक रहे थे। अकबर की सेना पीछे पड़ी थी। उनके साथ महारानी, छोटी-सी राजकुमारी और अबोध राजकुमार भी थे। कभी गुफा में, कभी वन में तो कभी किसी नाले में रात काटनी पड़ती थी। वन में कंदमूल तो दूर, घास के बीजों की रोटी भी कई-कई दिन पर मिल पाती थी। बच्चे सूखकर कंकाल हो रहे थे। एक दिन बड़ी मुश्किल से मात्र एक ही घास की रोटी बनी। महाराणा और रानी ने तो जल पीकर ही संतोष कर लिया। आधी-आधी रोटी दोनों बच्चों को दे दी। राजकुमार ने अपना हिस्सा तत्काल खा लिया। किन्तु राजकुमारी छोटी बच्ची होने के बावजूद परिस्थिति समझती थी। छोटा भाई कुछ घंटे बाद भूख से रोएगा, यह सोचकर राजकुमारी ने अपनी आधी रोटी पत्थर के नीचे दबाकर सुरक्षित रख ली। संयोगवश थोड़ी देर बाद एक अतिथि महाराणा से मिलने आए। राणा ने उन्हें पत्ते बिछाकर बैठाया। पैर धोने को जल दिया। इतना करके वह इधर-उधर देखने लगे। मन में यह था कि अतिथि को क्या खाने को दे। पुत्री ने पिता के भाव को समझ अपनी आधी रोटी पत्ते पर रखकर अतिथि को प्रस्तुत करते हुए बोली– देव, आप इसे ग्रहण करें। हमारे पास आपका सत्कार करने के लिये आज कुछ नहीं है। अतिथि ने रोटी खाई और जल पीकर विदाई ली। इस दौरान राजकुमारी मूर्छित होकर गिर गई। भूख से दुर्बल राजकुमारी ने अंततः प्राण त्याग दिये। वस्तुतः अतिथि के सत्कार हेतु यह उत्सर्ग आज के मशीनी होते जा रहे समाज के लिये प्रेरणास्पद है। ❑

गुरु दक्षिणा

संत रैक्व महान साधक थे। राजा जनक ने भी उनकी साधना की चर्चा सुनी तो उनसे मिलने के लिये बेचैन हो गए। वे एक दिन रैक्व से मिले और उनसे गहन मंत्रणा की। राजा जनक संत रैक्व के ज्ञान से अत्यधिक प्रभावित हुए वे गुरु दक्षिणा देना चाहते थे अतः बोले, 'आपने मुझे साधना का नया द्वार दिखाया है, नया ज्ञान दिया है, जीवन को एक नई दिशा दी है इससे मैं आपका ऋणी हो गया हूं। मैं आपको गुरु दक्षिणा के रूप में अपना राज्य सौंपना चाहता हूं।'

जनक की बात सुनकर हंसते हुए रैक्व ने कहा, 'मैं तो राज्य चलाना भी नहीं जानता, राज्य लेकर मैं क्या करूंगा?राज्य तो राजसी प्रवृत्ति के व्यक्ति की अभिलाषा होती है। मैं तो राजोगुण और तमोगुण छोड़कर सतोगुण की साधना में लगा हूं। मुझे राज्य की आकांक्षा नहीं है।'

'किन्तु आपने मेरा ज्ञान जगाया है, ज्ञान का विस्तार किया है अतः गुरु दक्षिणा के रूप में अवश्य ही कुछ तो स्वीकार कीजिये', जनक ने कहा।

संत बोले, 'यदि आप मुझे कुछ देना चाहते हैं तो राज्य नहीं बल्कि राज्य देने का अपना अहंकार मुझे दे दीजिये। अहंकार व्यक्ति की बुद्धि, धन एवं ज्ञान आदि को भ्रष्ट कर देता है, इसलिये आप अपना अहंकार मुझे गुरु दक्षिणा में दे दीजिये। आप फिर कभी भी किसी चीज का अहंकार नहीं करें।'

राजा जनक ने स्वीकार करते हुए कहा, 'गुरुजी मैं अब कभी भी किसी चीज का अहंकार नहीं करूंगा। आज गुरु दक्षिणा में मैंने आपको अपना अहंकार देकर सदा के लिये इससे मुक्त हो गया हूं।

इस कथा से सीख मिलती है कि घमण्ड से व्यक्ति का पतन होता है। अतः कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिये।'❑

विश्व दर्पण में भारतीय संस्कृति

❑ चेतन कौशल 'नूरपुरी'

विश्व मानचित्र पर प्राचीन भारतवर्ष आर्यावर्त देश रहा है। आर्य वेदों को मानते थे। वे अपने सब कार्य वेद सम्मत करते थे। वेद जो देव वाणी पर आधारित है, उन्हें ऋषि-मुनियों द्वारा श्रव्य ज्ञान-लिपिबद्ध किया हुआ माना जाता है। वेदों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद सनातन हैं। वेद पुरातन होते हुए भी सदैव नवीन है। उनमें परिवर्तन नहीं होता है। वे कभी पुराने नहीं होते हैं।

समय परिवर्तनशील है जिसके साथ-साथ नश्वर संसार की हर वस्तु बदल जाती है। नहीं बदलता है तो वह मात्र सत्य है। सत्य सनातन है। वेद सत्य पर आधारित होने के कारण सदा नवीन, अपरिवर्तनशील और सनातन हैं। वेदों के अनुगामी और हमारे पूर्वज आर्य सत्यप्रिय, कर्मनिष्ठ, धार्मिक और शूरवीर थे। सत्यप्रियता, कर्मनिष्ठा, धार्मिकता और शूरवीरता ही वेदों का आधार है, उनका सार है। यही हमारी पुरातन सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक धरोहर है जिसे विश्व ने माना है।

सत्य ही ब्रह्म है, वह ब्रह्म जिसका किसी के द्वारा कभी कोई विघटन नहीं किया जा सकता। वह सदैव अभेद, अकाट्य और अखंडित है। ब्रह्म-ज्ञान और विषयक तात्विक ज्ञान प्राप्त करना ही पुरुष का परम कर्तव्य है जो उन्हें भली प्रकार समझ लेता है, जान जाता है, उसे सत्य-असत्य में भेद अथवा अंतर का पाना सहज हो जाता है। कोई कहे कि रात बड़ी काली होती है। रात को हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता है। यह पहला सत्य है। अगर काली रात में कोई दीपक प्रज्ज्वलित कर दिया जाए तो घोर अंधकार भी दिन के उजाले की तरह प्रकाश में बदल जाता है और तब हमें सब कुछ दिखाई देने लगता है। यह दूसरा सत्य है। इसी तरह मन, कर्म तथा वाणी द्वारा ब्रह्ममय हो जाने से मनुष्य सत्यवादी हो जाता है। तदोपरांत उसमें सत्यप्रियता, सत्यनिष्ठा जैसे अनेकों गुण स्वाभाविक ही पैदा हो जाते हैं।

ब्रह्म-ज्ञान अर्थात् अध्यात्मज्ञान से मनुष्य की अपनी पहचान होती है। वह जान जाता है कि उसमें क्या कर सकने की क्षमताएं विद्यमान हैं? वह स्वयं क्या-क्या कार्य कर सकता है? उनके संसाधन क्या हैं? अपने जीवन के निर्धारित लक्ष्य बेधन हेतु उन्हें धारण और उनका प्रयोग कैसे किया जाता है? उन क्षमताओं के द्वारा जीवन में उन्नति कैसे की जा सकती है।

जब वह ऐसा सब कुछ जान जाता है तब वह अपने गुण, संस्कार और स्वभाव से वह कार्य करता है जो उसे आरम्भ में कर लेना होता है। देर से ही सही, वह वैसा करके अपने कार्य में दक्षता प्राप्त कर लेता है। उसे कार्य कौशल प्राप्त हो जाता है जो उसकी अपनी आवश्यकता होती है।

ब्रह्म-ज्ञान से मनुष्य को उचित अनुचित और निषिध कार्यों का ज्ञान होता है। जनहित में उचित कार्य करना, वह अपना कर्तव्य समझता है। वह नैतिक, व्यावहारिक कार्य करता हुआ सदाचार का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। इस प्रकार उसके गुण-संस्कारों से दूसरों को प्रेरणा मिलती है। दूसरों के लिये वह एक आदर्श बन जाता है। वे उसका अनुसरण करते हैं और अपना जीवन सफल बनाते हैं।

ब्रह्म-ज्ञान से ही मनुष्य जागरूक होता है। उसका हृदय एवं मस्तिष्क ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है। जब वह इस स्थिति पर पहुंच जाता है तब वह स्वयं के शौर्य और पराक्रम को भी पहचान लेता है। वह समाज को संगठित करके उसमें नवजीवन का संचार करता है जिससे समाज और उसकी धन-सम्पदा की रक्षा एवं सुरक्षा होती है।

ब्रह्म ज्ञान रूपी जीवन रस ब्रह्मज्ञानी का अमूल्य आभूषण है। भले ही वह ब्रह्मचारी हो या गृहस्थी, वानप्रस्थी हो या संन्यासी, बिना ब्रह्म-ज्ञान के कोई भी जीवन उस शरीर के समान है जिसमें प्राण नहीं होते हैं। वास्तव में ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्म-ज्ञान का विकास और उसका विस्तार होता है। यही कारण है कि युगों-युगों से भारतीय संस्कृति जन-जन का कल्याण करती आई है, कर रही है और भविष्य में करेगी भी। इसके साथ हमारा जागरूक समाज जुड़ा हुआ है। वही उसका संवाहक है। यही कारण है कि परिस्थिति चाहे कोई भी हो, हर परिस्थिति का सामना करने हेतु भारतीय संस्कृति से प्रेरित देश की उभरती हुई नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक शक्तियों का विश्व ने लोहा माना है।

ब्रह्म-ज्ञान मनुष्य जीवन को पुष्ट करता है। उसे अजेयी शक्ति प्रदान करता है। शायद इन पंक्तियों में इसी प्रकार के भाव भरे हुए हैं।

सुगंध बिना पुष्प का क्या करें?
तृप्ति बिना प्राप्ति का क्या करें?
ध्येय बिना हर कर्म निरर्थक है
प्रसन्नता बिना मानव जीवन व्यर्थ है। ❑

हिन्दू आतंकवाद का 'फोबिया'

❑ नरेंद्र सहगल

एलोपैथी के डॉक्टर बताते हैं कि 'फोबिया' नाम की बीमारी उस व्यक्ति को लगती है जिसकी विचार शक्ति जवाब दे गई हो, जिसकी बुद्धि कुंठाग्रस्त हो जाए, जिसे अपना भविष्य लड़खड़ाता हुआ दिखाई दे और जो आंख, कान, दिमाग को बंद करके केवल मुंह का ही इस्तेमाल करे। ऐसा व्यक्ति एक ही विचार अथवा शब्द को पकड़कर दिन रात उसी की मुहारनी पढ़ता रहता है। लगता है मध्य प्रदेश की राजनीति में भाजपा के हाथों बुरी तरह पिटने के पश्चात् दिल्ली में अपना राजनीतिक भविष्य तलाश रहे कांग्रेस के महामंत्री दिग्विजय सिंह को भी 'हिन्दू आतंकवाद' का फोबिया हो गया है। संघ जैसी राष्ट्रवादी शक्तियों को देशद्रोही हिंसक आतंकी गुटों में शामिल करने के कांग्रेसी अभियान का झंडा उठाए हुए दिग्विजय सिंह को वास्तव में न तो हिन्दुत्व की गौरवशाली परम्पराओं का ज्ञान है और न ही हिंसक आतंकवाद की पृष्ठभूमि की जानकारी है।

तर्कहीन वक्तव्य

हाल ही में दैनिक जागरण समाचार पत्र में छपे दिग्विजय सिंह के साक्षात्कार से पता चलता है कि 'हिन्दू आतंकवाद' का हिन्दुत्व विरोधी राजनीतिक खेल सोनिया और राहुल की मुट्ठी में बंद कांग्रेस द्वारा सोच-समझकर खेला जा रहा है। दिग्विजय सिंह यह दावा करते हैं कि उनके विरोधी कांग्रेस को नहीं जानते, 'जो लोग मेरी लाइन को अलग मानते हैं, वे शायद कांग्रेस का इतिहास नहीं पढ़ते... जो-जो बातें मैंने कही हैं वे कांग्रेस के कार्यक्रम, घोषणा पत्र, नीतियों, इतिहास और परम्परा के अनुरूप ही कही हैं।' इसका अर्थ यह हुआ कि दिग्विजय सिंह ने आज तक जो विरोधाभासी बयान दागे हैं वे सभी कांग्रेस की चाल ढाल के अनुरूप ही नहीं, अपितु कांग्रेस के बड़े नेताओं विशेषतया सोनिया गांधी, राहुल गांधी और डॉ. मनमोहन सिंह की योजनानुसार ही दागे हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि सोनिया पार्टी के भीतर एक ऐसी लॉबी तैयार हो रही है जो अपने वोट बैंक को पुनः प्राप्त करने के लिये चर्च और मस्जिद की ओर देख रही है। मतदाताओं के इन दोनों मजहबी समूहों को प्रसन्न करने के लिये हिन्दुओं को बदनाम करने की रणनीति बना रहे कांग्रेसी नेताओं को 'हिन्दू आतंकवाद' जैसे बेबुनियाद और झूठे शगूफे छोड़ते हुए तनिक भी परहेज नहीं हो रहा।

हिन्दू शब्द के साथ आतंक शब्द को जोड़कर दिग्विजय सहित कांग्रेस के सभी बड़े नेता कानून, न्यायालय, राजनीतिक शिष्टाचार सबका उल्लंघन कर रहे हैं। अपने साक्षात्कार में दिग्विजय सिंह ने सीधा दावा ही कर दिया है कि 'आरएसएस के लोग आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हैं।' जबकि भारत के किसी भी न्यायालय ने अभी तक इस संदर्भ में एक भी फैसला नहीं सुनाया। मालेगांव, अजमेर, हैदराबाद और समझौता एक्सप्रेस में हुए बम धमाकों को आधार बनाकर संघ के दो-चार कार्यकर्ताओं सहित कुछ साधुओं एवं सैन्य अधिकारियों को गिरफ्तार करके पूछताछ की गई है।

भारत में श्रेष्ठ न्याय व्यवस्था है। देश के संविधान में कांग्रेसी नेताओं सहित सभी नागरिकों को आरोप लगाने, सिद्ध करने और बचाव करने के कानूनी अधिकार दिये गए हैं। न्यायालय में दूध का दूध और पानी का पानी सब कुछ सिद्ध हो जाएगा। फिर भी यदि दिग्विजय जैसे कांग्रेसी नेता संघ को बदनाम करने के लिए हिन्दू आतंकवाद का शोर मचाए जा रहे हैं तो इसका सीधा अर्थ यही है कि इन्हें इन शब्दों का 'फोबिया' हो गया है। इसी बीमारी के कारण ये नेता बार-बार एक ही बात चिल्लाए जा रहे हैं।

हिन्दू संस्कृति पर कुठाराघात

कुछ इक्की-दुक्की घटनाओं को लेकर सारे हिन्दू समाज को 'आतंकवादी' बना डालने के षड्यंत्र रच रहे दिग्विजय जैसे राजनेताओं ने कभी कश्मीर घाटी में व्याप्त भारत विरोधी हिंसक आतंकवाद को इस्लामी आतंकवाद क्यों नहीं कहा?

मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम सहित देश के कई भागों में चलती रही और चल रही हिंसक गतिविधियों को ईसाई आतंकवाद क्यों नहीं कहा?यहां तक कि नब्बे के दशक में पंजाब में चले पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को भी सिख आतंकवाद नहीं कहा गया?फिर हिन्दू आतंकवाद कहकर इस देश की राष्ट्रीय पहचान हिन्दुत्व का अपमान क्यों किया जा रहा है?हिन्दू समाज पर किया जा रहा यह अपमानजनक आघात वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद, हिन्दू संस्कृति, आध्यात्मिक संतों, राष्ट्रीय महापुरुषों, हिन्दू वाङमय, हिन्दू धार्मिक स्थलों और उन हिन्दू संस्थानों को प्रताड़ित करने की घृणित साजिश है जो हिन्दुत्व के ध्वजवाहक हैं।

हिन्दू शब्द के साथ आतंक शब्द को जोड़कर दिग्विजय सहित कांग्रेस के सभी बड़े नेता कानून, न्यायालय, राजनीतिक शिष्टाचार सबका उल्लंघन कर रहे हैं। अपने साक्षात्कार में दिग्विजय सिंह ने सीधा दावा ही कर दिया है कि 'आरएसएस के लोग आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हैं।' जबकि भारत के किसी भी न्यायालय ने अभी तक इस संदर्भ में एक भी फैसला नहीं सुनाया।

दिग्विजय सिंह ने यह भी कहा, 'मैंने कांग्रेस अधिवेशन में गृहमंत्री को बधाई दी थी कि उन्होंने इस संवेदनशील मुद्दे को गम्भीरता से लिया है। रही बात हिन्दू चरमपंथी ताकतों की तो आप नोटिस करें कि मालेगांव ब्लास्ट में हुई गिरफ्तारी के बाद देश में कोई बड़ा धमाका नहीं हुआ। वरना हर साल दो चार मेजर ब्लास्ट हो जाते थे।' कांग्रेस की झोली में मुसलमानों के थोक वोट डालने के लिये किसी भी हद तक जाने वाले दिग्विजय सिंह ने कई बातें स्वीकार कर ली हैं। घटनाओं की जांच और सुनवाई चल रही है अर्थात् अभी तक आरोप सिद्ध नहीं हो सके। मात्र इन चार घटनाओं को छोड़कर देश में कोई और इस तरह का धमाका नहीं हुआ। वे इन्हीं चार धमाकों को संवेदनशील मानते हैं। उनकी नजर में कश्मीर घाटी में हो रहे आतंकी धमाके, माओवादियों द्वारा किये जा रहे भीषण नरसंहार, दिल्ली, जयपुर, नागपुर, बंगलौर, अयोध्या, मुम्बई और अभी हाल ही में काशी में गंगाघाट इत्यादि स्थानों पर जिहादियों द्वारा किये गए बड़े-बड़े विस्फोट, जिनमें हजारों लोगों की जानें गई हैं, संवेदनशील मुद्दे नहीं हैं। 'हिन्दू/भगवा आतंकवाद' नामकरण करने वाले दिग्विजय सहित किसी भी कांग्रेसी नेता ने इस आतंकवाद का नाम और रंग नहीं बताया।

असत्य पर आधारित राजनीति

दिग्विजय सिंह आगे फरमाते हैं कि 'मक्का मस्जिद, मालेगांव धमाके, अजमेर दरगाह, समझौता एक्सप्रेस और मोडासा इन सभी जगह हुए धमाकों का तरीका एक है और वही लोग करने वाले हैं। इसलिये इस जांच को एक एजेंसी को सौंपना चाहिये। अभी जांच बिखरी हुई है। कहीं एटीएस महाराष्ट्र जांच कर रही है, तो कहीं एटीएस राजस्थान और एनआईए या सीबीआई। जब अभियुक्त एक ही है तो सारी जांच एक एजेंसी से करानी चाहिये। और देश के सबसे अच्छे अधिकारी इस काम में तैनात करने चाहिये।' वह यह कहते हैं कि इन मामलों की जांच एक ही एजेंसी और योग्य अधिकारी द्वारा होनी चाहिये। वर्तमान जांच एजेंसियों पर उनका भरोसा नहीं है। यानी वे अधूरी, अक्षम और बिखरी हुई हैं।

मात्र तीन चार घटनाओं के लिये एक सशक्त और केन्द्रित जांच एजेंसी की मांग रखने वाले दिग्विजय सिंह पिछले तीन दशकों से हजारों बेकसूर लोगों को मौत के घाट उतारने वाले सैकड़ों आतंकी हादसों के लिये कोई एक संयुक्त जांच एजेंसी की मांग क्यों नहीं करते? साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, स्वामी असीमानंद और पूर्व सैन्याधिकारी कर्नल पुरोहित इत्यादि चंद लोगों को 'हिन्दू आतंकवादी' बताकर समस्त हिन्दू समाज पर लांछन लगाने वाले सोनिया भक्त दिग्विजय सिंह को कश्मीरी आतंकियों, पाकिस्तान की

संघ द्वारा गृह सम्पर्क अभियान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संतों व हिन्दुत्व के खिलाफ कुछ राजनीतिज्ञों द्वारा चलाए जा रहे दुष्प्रचार के खिलाफ फरवरी में गृह सम्पर्क अभियान चलाएगा। संघ के प्रान्त संघचालक कर्नल (से.नि.) रूपचंद जी ने बताया कि इस अभियान के तहत कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क करेंगे और हिन्दू विरोधी दुष्प्रचार की राजनीति, जम्मू कश्मीर तथा श्रीराम मंदिर के विषय में लोगों को जानकारी देंगे। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत प्रदेश के साढ़े पांच लाख घरों में सम्पर्क किया जाएगा। कार्यकर्ता उपरोक्त विषयों के पत्रक, स्टीकर और पुस्तकों का वितरण करेंगे। ❑

खुफिया एजेंसी आईएसआई के एजेंटों, देश को तोड़ने के लिये पुन: सिर उठा रहे खालिस्तानियों और भारत के एक चौथाई भाग में खूनखराबा कर रहे माओवादियों पर उंगली उठाते हुए कभी नहीं देखा गया। जैसे खिलखिलाती धूप (तथ्यात्मक सच्चाई) को देखते ही किसी व्यक्ति का 'फोटो क्रोमेटिक' चश्मा काला हो जाता है और छाया (असत्य) के पास पहुंचते ही साफ हो जाता है ठीक वैसे ही दिग्विजय सिंह को अपनी आंखों पर चढ़ा रखे राजनीतिक चश्मे से सच्चाई में काला काला और झूठ में सफेद नजर आता है। इसी को दृष्टि फोबिया भी कहते हैं।

जिहादी आतंक पर मौन क्यों?

राहुल गांधी को बेहद बुद्धिमान और सुलझे हुए व्यक्ति बताने वाले दिग्विजय सिंह को भारत से लेकर अमरीका तक हिंसा फैला रहे जिहादियों में आतंकवाद दिखाई नहीं देता। उन्हें तो बस संघ, और विश्व हिन्दू परिषद् जैसे राष्ट्रभक्त संगठनों में आतंकवाद नजर आता है। जिस तरह सावन के अंधे को हरा हरा ही दिखाई देता है उसी तरह इस नक्सलवाद और अलगाववाद के घोषित समर्थक को सब जगह यही कुछ नजर आने लगा है। हिन्दुओं की उदारता, सहनशक्ति और समन्वयवादी मानसिकता के कारण ही सम्भवतया हिन्दुस्थान में 'हिन्दू आतंकवाद' जैसे अपशब्दों को कहा जा सकता है और बार-बार दोहराया जा सकता है। कल्पना, करें कि यदि किसी मुस्लिम देश में 'इस्लामी आतंकवाद' अथवा किसी चर्च पर आस्था रखने वाले देश में 'ईसाई आतंकवाद' की बात कही जाए तो कहने वालों का क्या हाल होता?

राहुल, सोनिया, डा. मनमोहन सिंह के आशीर्वाद से तैयार हुए कांग्रेसी सेक्युलरवाद के आधुनिक संस्करण दिग्विजय सिंह ने पाकिस्तानी आतंकियों से लोहा लेते हुए शहीद हुए हेमंत करकरे से सम्बंधित बयान देकर न केवल करकरे की शहादत का महत्व कम किया है, बल्कि पाकिस्तान के पक्ष को मजबूत भी किया है। करकरे द्वारा दिग्विजय को किये गए कथित फोन को बीएसएनएल के रिकॉर्ड ने गलत साबित कर दिया है। प्रस्तुत दस्तावेज के अनुसार 26/11 के आतंकी हमले से कुछ समय पहले करकरे ने नहीं, बल्कि दिग्विजय सिंह ने करकरे के कार्यालय में फोन किया था। यह तथ्य अभी विचारणीय है कि यदि वास्तव में करकरे को हिन्दू संगठनों से खतरा होता तो वह मुख्यमंत्री या फिर प्रधानमंत्री से बात करते। दिग्विजय की संवैधानिक स्थिति क्या है? दिग्विजय से बात करने का कोई भी औचित्य नजर नहीं आता। हेमंत करकरे की पत्नी कविता करकरे ने तो पहले ही दिग्विजय के बयान को खारिज करते हुए इसे अपने शहीद पति के लिये अपमानजनक बता दिया था।

एक मंच पर आएं हिन्दू संगठन

चीन, चर्च और इस्लाम प्रेरित राजनेताओं के इशारे पर राजनीति कर रहे दिग्विजय सिंह ने राजनीतिक एवं सामाजिक मर्यादाओं की सारी सीमाएं पार करते हुए एक बार फिर संघ के नेताओं पर उंगली उठाई है। स्पष्ट है कि अपनी राजनीतिक औकात से ऊपर उठकर दिग्विजय सिंह अपने को सरकारी जांच एजेंसियों और न्यायालय से भी बड़ा समझने का अपराध कर रहे हैं।

सेना और न्यायपालिका में संघ परिवार की घुसपैठ जैसे तर्कहीन बयान देने वाले इस तथाकथित सेकुलर नेता से पूछा जाना चाहिये कि यदि उसका कोई बेटा अथवा रिश्तेदार सैन्याधिकारी या न्यायाधीश बन जाए तो इसे क्या सेना और न्यायपालिका में दिग्विजय सिंह की घुसपैठ माना जाएगा?संघ के स्वयंसेवक देश के नागरिक हैं उन्हें सेना, न्यायपालिका, राजनीति सहित सभी क्षेत्रों में सेवार्थ जाने का अधिकार है। इसे घुसपैठ कहकर पुकारने वालों की बुद्धि में पांव जमा चुके 'हिन्दू आतंकवाद' के फोबिया को आसानी से देखा और समझा जा सकता है। दिग्विजय के सभी आधारहीन वक्तव्यों में विदेश प्रेरित राजनीति की गंध आती है। अत: देश की सभी राष्ट्रवादी शक्तियों को एक मंच पर आकर भारतीय संस्कृति अर्थात् हिन्दुत्व के विरुद्ध छेड़ी गई इस 'जंग' को पूरी ताकत से पराजित करना चाहिये। ❑

हिन्दू आतंकवाद का आरोप ठीक नहीं...

भगवा आतंकवाद शब्द को बार-बार दोहराए जाने पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कांग्रेस को आड़े हाथों लिया। मुख्यमंत्री निवास पर संवाददाताओं से बातचीत में एक प्रश्न के उत्तर में नीतिश ने कहा कि हर प्रकार का आतंकवाद खतरनाक होता है। हिन्दूवादी आतंकवाद पर कांग्रेस का आरोप ठीक नहीं है। हिन्दूवादी आतंकवाद शब्द का प्रयोग कर आतंकवाद के ध्रुवीकरण की कोशिश हो रही है, जो ठीक नहीं है। ❑

कांग्रेस के दोहरे मापदंड और संघ

❑ साकेंद्र प्रताप वर्मा

सोनिया के कांग्रेसी आजकल बड़े जोर-शोर से संघ और सम्पूर्ण हिन्दुत्व को आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त दर्शाने की कोशिश में जुटे हैं तथा आत्मप्रशंसा में स्वयं को सवा सौ साल की राजनीतिक परम्परा का वाहक बता रहे हैं।

वैसे, ईमानदारी से विश्लेषण करें तो आतंकवाद के नाम पर हजारों की संख्या में पकड़े गए लोगों में से मात्र 10-12 लोग ही फर्जी या असली तौर पर हिन्दू समुदाय के हैं। उसमें से भी एकाध को कथित तौर पर कभी न कभी संघ से जुड़ा बताया जा रहा है। दिग्विजय सिंह तो आदत से मजबूरी के कारण सोते-जागते, उठते-बैठते हिन्दुत्वविरोधी बयानों को उसी प्रकार से बड़बड़ाने लगते हैं जैसे कोई सन्निपातग्रस्त रोगी अजीबोगरीब बातें बड़बड़ाता रहता है। सौ करोड़ से अधिक के हिन्दू समाज में से अगर 10-12 हिन्दुओं की गतिविधियां कथित तौर पर आतंकवाद में शामिल पाई गईं भी तो क्या इससे सम्पूर्ण हिन्दू समाज ही आतंकवादी हो जाएगा?अगर नहीं, तो 'हिन्दू आतंकवाद' या 'भगवा आतंकवाद' का शिगूफा छोड़कर कांग्रेसी देश को कहां ले जाना चाहते हैं?सत्य तो यह है कि आतंकवाद में पकड़े गए 99 प्रतिशत लोग इस्लामपंथी हैं, ऐसी स्थिति में कांग्रेस या दिग्विजय सिंह में क्या इतना साहस है कि वह कश्मीर सहित देशभर में हिन्दू मानबिन्दुओं पर हो रहे हमलों को 'इस्लामी आतंकवाद' कह सकें?

संघ तो खुली किताब है, उसकी तुलना सिमी से करने में कांग्रेसियों को परहेज नहीं, किन्तु क्या कांग्रेस के पास यह हिम्मत है कि वह सिमी की उस वास्तविकता को जनता के सामने रखे जिसके कारण उसने सिमी पर प्रतिबंध लगा रखा है?

क्या वह कांग्रेसी आतंकवाद नहीं?

हमें याद है कि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद कांग्रेसियों ने संगठित रूप से हजारों की संख्या में निर्दोष सिखों का कत्लेआम किया था और अपने इस कुकृत्य को वैधानिकता का चोला पहनाने की दृष्टि से तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो इस प्रकार का भूचाल आ ही जाता है। किन्तु गोधरा में 58 निर्दोष कारसेवक ट्रेन में जिन्दा जला दिये गए, उसकी प्रतिक्रिया में गुजरात में कुछ घटनाएं हो गई तो कांग्रेस ने नरेन्द्र मोदी को 'मौत का सौदागर' तक कहने की हिमाकत की। यदि इसी तर्ज पर कांग्रेस को 'सिखों की हत्यारी पार्टी' कहा जाए तो कैसा लगेगा? इटली की गुप्तचर संस्थाओं से साठ-गांठ तथा क्वात्रोची से निकट सम्बंध देश में किस नेता के हैं, यह भी जगजाहिर हो चुका है। तो क्या उस नेता के नेतृत्व में चलने वाली पार्टी को देशद्रोही या देशविरोधी पार्टी नहीं कहा जाना चाहिये? सन् 2005 में कांग्रेस के गुजरात के पूर्वमंत्री मो. सुरती और उनके पांच कांग्रेसी सहयोगी सूरत में हुए बम विस्फोट के मामले में दोषी पाए गए, विस्फोटक सामग्री उनकी लाल बत्ती लगी गाड़ी में भेजने के प्रमाण मिले, ऐसी स्थिति में तो कांग्रेस को 'आतंकी पार्टी' घोषित करने में विलम्ब नहीं करना चाहिये था।

कांग्रेस कोयम्बटूर हमले के मुख्य आरोपी को केरल चुनाव में लाभ लेने के लिये जेल से रिहा करवा सकती है, किन्तु मौलाना बुखारी को न्यायालय का सम्मन तामील करवाने में असफल हो जाती है। अफजल और कसाब को फांसी से बचाने के लिये अनर्गल बयानबाजी करते हुए मुकदमों को कमजोर करने का षड्यंत्र कर सकती है लेकिन साध्वी प्रज्ञा ठाकुर पर मकोका लगाने के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगा सकती है। और तो और दिल्ली की छाती पर चढ़कर भारत विरोधी भाषण देने वाले गिलानी और अरुंधती राय को गिरफ्तार करने में भी कांग्रेस सरकार डर जाती है। देश के सभी प्रमुख मंदिरों पर सरकारी 'रिसीवर' बैठाकर उसके चढ़ावे को गैरधार्मिक कार्यों में खर्च करने का कुचक्र रचा जा सकता है किन्तु क्या इस्लामी संस्थाओं (मसिजदों-मकबरों) से प्राप्त होने वाले दान का हिस्सा भी दूसरे मदों में खर्च करने के लिये सरकारी 'रिसीवर' बैठाने का साहस कांग्रेस सरकार के पास है? संघ तो खुली किताब है, उसकी तुलना सिमी से करने में कांग्रेसियों को परहेज नहीं, किन्तु क्या कांग्रेस के पास यह हिम्मत है कि वह सिमी की उस वास्तविकता को जनता के सामने रखे जिसके कारण उसने सिमी पर प्रतिबंध लगा रखा है?

हताश घोटालेबाज कांग्रेस

कांग्रेस सावरकर को पसन्द नहीं करती, सुभाष, चन्द्रशेखर, भगत सिंह, तिलक, अशफाकउल्ला खां को भी नहीं पसंद करती। हजारों बलिदानी वीरों का उससे कोई नाता नहीं। आजादी के बाद

तो नाता जुड़ा केवल धंधेबाजों से, घोटालों के सरताजों से। बोफोर्स घोटाला तो राजीव गांधी के गले की हड्डी ही बन गया। देश अगर बीते 63 वर्षों में कांग्रेस द्वारा किये गए अरबों करोड़ रुपये के घोटालों को भूल भी जाए तो भी आदर्श सोसायटी घोटाला, राष्ट्रमण्डल खेल घोटाला तथा 'टूजी स्पेक्ट्रम' घोटाला बीते दो-तीन महीने में मनमोहन सरकार की विशेष उपलब्धि कैसे भूली जा सकती है, जिससे कई लाख करोड़ रुपये पूरे गिरोह ने मिलकर डकार लिये। क्या कोई कम समझदार आदमी भी मान सकता है कि अकेले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री सारा पैसा हजम कर गए, या सुरेश कलमाड़ी सारा पैसा बांध ले गए, या फिर ए. राजा ने अकेले सारा बाजा बजा दिया?वास्तव में इसमें पूरा कांग्रेसी गिरोह शामिल है। 10 जनपथ से 7 रेसकोर्स तक बैठे हुए हर एक व्यक्ति की जांच ही नहीं, 'स्क्रीनिंग' भी होनी चाहिये। किन्तु कांग्रेस इस बात को कैसे मान ले, आखिर सवा सौ साल का अनुभव भी तो उसके साथ है। उसे पता है कि जब विपक्ष वाले बिल्कुल न मानें तो देश में आपातकाल लगा दो, सभी नेताओं को जेल में डाल दो और 'इंदिरा इज इण्डिया' की तर्ज पर बता दो 'सोनिया इज इण्डिया', 'राहुल इज इण्डिया'। बाकी कुछ बोला तो 'देशविरोधी'।

वस्तुतः संघ एक प्रखर देशभक्त संगठन है तथा सत्य-पथ का अनुगामी है, इसलिए असत्य के मार्ग पर चलने वाले नए-नए आरोपों से संघ का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। हां, देशभक्ति की प्रखर ज्वाला को बुझाने में अपने हाथ-मुंह झुलसा लेने की गलती कर सकते हैं।

लेकिन इस बार कांग्रेस समझ गई कि विपक्षी दल एकजुट हो गए हैं, संकट ज्यादा गहरा है। इसलिये 'चोर मचाये शोर' की तर्ज पर चिल्लाना शुरू कर दिया कि संघ वाले आतंकवाद में संलग्न है, भाजपा इनका साथ दे रही है। कांग्रेस मौका तलाश रही है कि ऐसे आरोपों से यदि भाजपा उग्र प्रतिक्रिया करे तो उसके साथियों को राजग से अलग करने का प्रयास किया जाए, किन्तु कांग्रेस का यह मंसूबा भी सफल नहीं हुआ।

संघ का प्रभाव

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में कांग्रेस की दृष्टि अपनी जरूरत के हिसाब से बदलती रहती है। 1947 में जब कश्मीर का मामला फंस गया, तब संघ याद आया। श्रीगुरुजी को महाराजा कश्मीर से वार्ता करने के लिये विशेष सरकारी विमान से 18 अक्तूबर, 1947 को नेहरू सरकार ने ही भेजा था। किन्तु बाद में संघ की लोकप्रियता से चिढ़े पं. नेहरू ने गांधी हत्या का आरोप लगाकर 26 फरवरी, 1948 को संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। श्रीगुरुजी के विरुद्ध मुकदमा कायम हुआ, जिसे दो दिन बाद ही वापिस लेना पड़ा तथा 12 जुलाई, 1949 को प्रतिबंध भी बिना शर्त उठा लिया। चीन के आक्रमण के समय संघ के सहयोग से प्रभावित होकर पं. नेहरू ने अब संघ के स्वयंसेवकों को सम्मानपूर्वक 26जनवरी, 1963 की परेड में आमंत्रित किया, उसी संघ को जिसे वह देश में भगवा ध्वज फहराने के लिये एक इंच भी भूमि न देने की गर्वोक्ति करते थे। 1965 में पाकिस्तान युद्ध के समय इसी कांग्रेस सरकार ने सरसंघचालक श्रीगुरुजी को सर्वदलीय बैठक में आमंत्रित किया था। किन्तु इंदिरा गांधी को संघ के बढ़ते कदमों से खतरा लगा और उन्होंने 1975 में आपातकाल के दौरान संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। किन्तु वह प्रतिबंध भी 22 मार्च, 1977 को हटाना पड़ा और सरकार को अपना सिंहासन छोड़ना पड़ा। अयोध्या में विवादित ढांचा गिरने के बाद 10 दिसम्बर, 1992 को संघ पर फिर एक बार इन्हीं लोगों ने प्रतिबंध लगाया, किन्तु 4 जून, 1993 को न्यायालयीय आदेश के बाद यह प्रतिबंध भी हटाना पड़ा।

अगर हम महापुरुषों के कथन को याद करें तो 1928 में कलकत्ता में सुभाष बाबू ने कहा था कि संघ कार्य से ही राष्ट्र का पुनरुद्धार हो सकता है। 1938 में पंजाब के मुख्यमंत्री सिकन्दर हयात खां ने कहा था कि संघ एक दिन भारत की बड़ी ताकत बनेगा। 1939 में डॉ. अम्बेडकर ने पूर्ण शिविर में संघ को बिना भेदभाव वाला संगठन बताया था। 1940 में पुणे में वीर सावरकर ने संघ को एकमात्र आशा की किरण कहा था। 16 दिसम्बर, 1947 को दिल्ली में महात्मा गांधी ने कहा था कि संघ शक्तिमान हुए बिना नहीं रहेगा। सरदार पटेल, जनरल करियप्पा, कोका सुब्बा राव, लोकनायक जय प्रकाश नारायण, अच्युत पटर्वधन समेत ब्रिटिश प्रधानमंत्री मार्गेट थ्रैचर ने संघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वस्तुतः संघ एक प्रखर देशभक्त संगठन है तथा सत्य-पथ का अनुगामी है, इसलिए असत्य के मार्ग पर चलने वाले नए-नए आरोपों से संघ का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। हां, देशभक्ति की प्रखर ज्वाला को बुझाने में अपने हाथ-मुंह झुलसा लेने की गलती कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में दिग्विजय सिंह जैसों के बयान वैसे ही कृत्य हैं जैसे कोई सूर्य पर कीचड़ उछालने की कोशिश करेगा तो उसका चेहरा उसी से गंदा हो जाएगा।❑

सर्वश्रेष्ठ प्रदेश, हिमाचल प्रदेश

सभी क्षेत्रों का समान एवं संतुलित विकास तथा समाज के सभी वर्गों का कल्याण वर्तमान प्रदेश सरकार की वचनबद्धता है। सबका हित एवं सबका कल्याण प्रदेश सरकार का मूल मंत्र है। वर्तमान प्रदेश सरकार के समर्पित प्रयासों से हिमाचल प्रदेश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है और उसकी उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है।

- प्रतिष्ठित पत्रिका 'इंडिया टुडे' द्वारा 'स्टेट ऑफ दी स्टेट्स' सर्वेक्षण-2010 में हिमाचल प्रदेश 'बेस्ट बिग स्टेट' पाया गया। शिक्षा, निवेश तथा मैक्रो इकोनॉमी में सर्वश्रेष्ठ तथा कृषि, ढांचागत विकास, उपभोक्ता बाजार, गवर्नेंस में शीर्ष राज्यों में एक। आवासीय विकास कार्यक्रम में भी हिमाचल अव्वल रहा।
- 'इंडिया टुडे' के 2009 के वार्षिक सर्वेक्षण में भी हिमाचल प्रदेश विकास के सात मानकों में सर्वश्रेष्ठ पाया गया था और वर्ष 2008 में इसे छोटे राज्यों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ पाया गया।
- प्रतिष्ठित इलेक्ट्रॉनिक चैनल 'आई.बी.एन-7' तथा 'आउटलुक' पत्रिका द्वारा भी गत वर्ष करवाए गए देशव्यापी सर्वेक्षण में हिमाचल प्रदेश महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन, पर्यावरण संरक्षण तथा हरित आवरण में वृद्धि के लिए सर्वश्रेष्ठ पाया गया और 'डायमण्ड स्टेट अवार्ड' से सम्मानित किया गया।
- कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिये 'एग्रीकल्चर टुडे' पत्रिका द्वारा हिमाचल प्रदेश को 'स्टेट एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड-2010' प्रदान किया गया।
- ई-गवर्नेंस में हिमाचल प्रदेश देश का दूसरा सर्वश्रेष्ठ राज्य पाया गया है। ई-गजट प्रोजेक्ट के लिए हिमाचल प्रदेश को राष्ट्रीय अवार्ड मिला है।
- अक्षमता अधिनियम के कार्यान्वयन में भी हिमाचल प्रदेश गत वर्ष देश भर में प्रथम स्थान पर रहा है।
- हिमाचल प्रदेश को तीन परियोजनाओं में 'वैब रत्न गोल्ड' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। ये पुरस्कार ई-गवर्नेंस में 'वर्ल्ड वाइड वैब' के अनुकरणीय प्रयोग के लिये मिले हैं।
- 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना' के अन्तर्गत भी गरीबी रेखा से नीचे रह रहे परिवारों को नामांकित करने के लिये भी हिमाचल प्रदेश देश भर में प्रथम पाया गया है और इसे राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।
- मनरेगा के कार्यान्वयन में भी हिमाचल प्रदेश की उपलब्धियां सर्वश्रेष्ठ पाई गई है।
- वर्ष 2009-10 में बीस सूत्री कार्यक्रम के कार्यान्वयन में हिमाचल प्रदेश देश में पहले स्थान पर। ❑

सेवा भारती शिमला ईकाई ने ऐम्बुलेंस सेवा का शुभारम्भ किया

सेवा भारती शिमला जिला ने मकर संक्रान्ति को नई ऐम्बुलेंस सेवा आरम्भ की। शिमला के इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज परिसर में उपायुक्त श्री जे.एस. राणा, संघ के उतर क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री श्रीनिवास मूर्ति और प्रान्त प्रचारक श्री बनवीर जी ने इस सेवा का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर श्रीनिवास मूर्ति जी ने कहा कि सेवा भारती पिछले 30 वर्षों से सेवा कार्य कर रही है। पूरे देश में 60 हजार सेवा कार्य चल रहे हैं, इसमें महिला सिलाई केन्द्र, बाल संस्कार केन्द्र, चिकित्सा केन्द्र प्रमुख हैं। उन्होने कहा कि सेवा भारती को प्रशंसा नहीं सहयोग चाहिए। समाज को सेवा कार्यों में लगाना ही सेवा भारती का कार्य है। उन्होने उपस्थित लोगों से सेवा कार्य के लिए समय निकालने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि श्री जे.एस.राणा ने कहा कि सेवा भारती समाज के सभी वर्गों के लिए कार्य कर रही है इसलिए वह बधाई की पात्रा है। समाज को जोड़ने का पुनीत कार्य सेवा भारती कर रही है, सभी को इसमें सहयोग करना चाहिए। उन्होने कहा कि देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए सेवा भारती कार्य कर रही है, जो सराहनीय है।

इस अवसर पर सेवा भारती के संरक्षक श्री मनसा राम जी, अध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल, सचिव श्री सुरेन्द्र शर्मा, सहित शिमला के गणमान्य व्यक्ति, संघ और सेवा भारती के कार्यकर्ता उपस्थित थे। ❑

मुख्यमंत्री ने किया मातृवन्दना वेबसाईट का शुभारम्भ

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा है कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में आधुनिकतम तकनीक से ही मुकाबला करना होगा। जिस तन्त्र से आघात होगा उसी तन्त्रा से उसका जबाब देना पड़ेगा। प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने हिमाचल प्रदेश की मासिक पत्रिका मातृवन्दना की वेबसाईट के शुभारम्भ अवसर पर यह बात कही। उन्होंने कहा कि आप कितना भी अच्छा काम करते रहें लेकिन कुछ लोगों का धन्धा दुष्प्रचार पर ही चलता है। संघ विचार परिवार को भी उस दुष्प्रचार से लड़ना है। उन्होंने कहा कि केवल अच्छा होना ही आवश्यक नहीं, अच्छे होने का आभास भी दिलवाना पड़ेगा। आज सही बात सही माध्यम से समाज तक पहुँचाने की आवश्यकता है। इसमें मातृवन्दना की वेबसाईट से अधिक लाभ होगा।

उन्होंने कहा कि देश विरोधी लोग श्रीनगर में तिरंगा फहराने का विरोध कर रहें है लेकिन हैरानी इस बात की है कि केन्द्र की सता में बैठे लोग भी विरोध कर रहें हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीर को बचाने में हिमाचल के सैनिकों का बड़ा योगदान है। प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि चीन से घुसपैठ हो रही है लेकिन उसे हम अनदेखा कर रहे हैं। हम आज भी वही गलती दोहरा रहे हैं जो 1962 में दोहराई थी। वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रवादी शक्तियों को आगे आना पड़ेगा।

प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि जैसे स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में भाषण देकर पूरी दुनिया को अपने पीछे लगाया था उसी तरह वेबसाईट के माध्यम से मातृवन्दना भी पूरी दुनियां को अपने विचारों से आकर्षित करेगी।

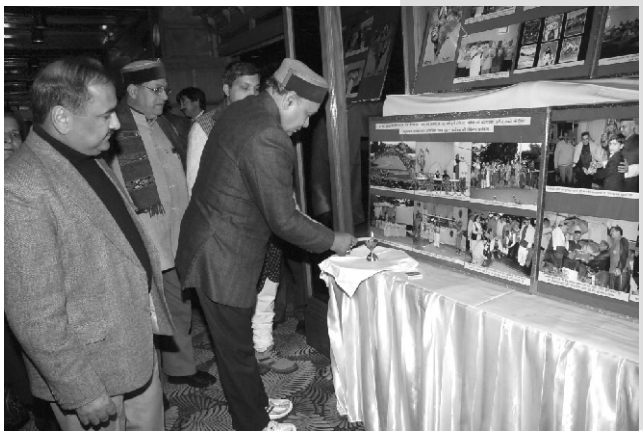

चित्र प्रदर्शनी का शुभारम्भ करते मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक श्री बनवीर जी ने कहा कि संघ ने प्रसिद्धि और प्रचार से दूर रहते हुए अपनी यात्राा प्रारम्भ की। कहीं नाम की इच्छा नहीं। जब काम होगा तो उसका प्रचार स्वयं ही हो जाएगा। लेकिन जब संघ के बारे में दुष्प्रचार अधिक होने लगा तो उसके कारण सही जानकारी लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से प्रचार विभाग का कार्य प्रारम्भ हुआ और आधुनिकतम तकनीक का भी प्रयोग संघ में प्रारम्भ हुआ। उन्होंने कहा कि भले ही पहले संघ में साधन कम थे लेकिन कार्य की गति कम नहीं हुई। कार्यकर्त्ता की तपस्या और तप में कमी नहीं होनी चाहिए, साधन तो स्वयं जुट जाऐंगे।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने वेबसाईट का शुभारम्भ किया। मातृवन्दना के प्रबंधक नरेन्द्र कुमार ने वेबसाईट की जानकारी दी तथा बताया कि www.matrivandana.org में जाकर मातृवन्दना के बारे में जान सकते हैं। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मातृवन्दना की विभिन्न गतिविधियों के चित्रों की प्रदर्शनी का भी दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन किया।

इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्रीमती विमला कश्यप, विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, श्री तेजवन्त नेगी, हि.प्र. खाद्य आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप शर्मा, उपायुक्त श्री जे. सी. राणा, लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक श्री बी.डी. शर्मा,हि.प्र.विद्युत निगम के सचिव श्री एम.पी.सूद साहित अनेक गणमानय लोग उपस्थित थे। ❑

शिक्षा को राजनीति में न घसीटें राजनीतिज्ञ : भाईजी

19 दिसम्बर को अपनी पार्टी के अधिवेशन में कांग्रेस के महामंत्री एवं मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि शिशु मन्दिरों में बच्चों में नफरत का जहर भरा जा रहा है। ये हिंसा और विद्वेष को बढ़ावा दे रहे हैं। उनके इस बयान को विद्या भारती के अखिल भारतीय संरक्षक श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी' ने घोर निदंनीय बताते हुए शिमला में एक पत्रकार वार्ता में कहा कि इस वक्तव्य के कारण हमारे प्रधानाचार्यों, आचार्यों और बच्चों के मन में क्षोभ है। दिग्विजय सिंह पिछले काफी समय से हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनों एवं उनके द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों के बारे में टीका-टिप्पणियां कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि उनका प्रयास भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बुरी तरह घिर चुकी कांग्रेस की ओर से लोगों का ध्यान हटाना है और विपक्षी दलों की एकता तोड़ना है क्योंकि सारे विपक्षी दल एकजुट होकर संसद से सड़क तक कांग्रेस को घेर रहे हैं, इसलिए वे लोगों के सामने संघ का 'हौव्वा' खड़ा करना चाहते हैं और शिशु मन्दिरों को लेकर तथ्यहीन बातें कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्री सिंह को ज्ञात होना चाहिए कि पिछले 60 वर्षों से विद्या भारती शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही है और आज तक विद्या भारती के विद्यालयों में पढ़ा हुआ प्रत्येक छात्र राष्ट्रहित के कार्य में लगा है।

दिग्विजय सिंह अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए शिशु मन्दिरों के प्रति मुसलमानों में विद्वेष की भावना भरना चाहते हैं। किंतु अपना मानना है कि किसी भी राजनेता या राजनीतिक दल को शिशु मंदिरों, जो कि व्यक्ति और राष्ट्र निर्माण में लगे हैं, को गंदी राजनीति में नहीं घसीटना चाहिए। आधारहीन बातें करने वाले दिग्विजय सिंह को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और महामंत्री राहुल गांधी प्रश्रय दे रहे हैं।

भाई जी ने कहा कि दिग्विजय सिंह अपना राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए शिशु मन्दिरों के प्रति मुसलमानों में विद्वेष की भावना भरना चाहते हैं। किंतु अपना मानना है कि किसी भी राजनेता या राजनीतिक दल को शिशु मंदिरों, जो कि व्यक्ति और राष्ट्र निर्माण में लगे हैं, को गंदी राजनीति में नहीं घसीटना चाहिए। उन्होंने कहा कि आधारहीन बातें करने वाले दिग्विजय सिंह को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और महामंत्री राहुल गांधी प्रश्रय दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के बयानों से विद्या भारती या शिशु मंदिरों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ेगा, बल्कि कांग्रेस की छवि ही खराब होगी क्योंकि हमारे विद्यालयों में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं एवं विभिन्न जाति, पंथ तथा सम्प्रदायों के बच्चे पढ़ते हैं। ये लोग अपने बच्चों के माध्यम से विद्या भारती को जानते हैं और बच्चों के गुणों की पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में व्यवहार की सराहना करते हैं।

भाई जी ने कहा कि विद्या भारती के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त राष्ट्र एवं समाज जीवन के प्रशासनिक तथा सामाजिक जीवन के दायित्वों का निवर्हन करने वाले 10 लाख से अधिक पूर्व छात्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विदेशों में भी जहां विभिन्न प्रकार के दायित्वों को लेकर कार्य कर रहे हैं वहां पर भी विद्या भारती के विद्यालयों की छवि उनके द्वारा प्रदर्शित होती है। उन्होने कहा कि दिग्विजय सिंह जैसे नेताओं को शिशु मंदिरों में बच्चों को दिये जाने वाले संस्कार अच्छे नहीं लगते हैं। उनके द्वारा दिये गये इस प्रकार के ब्यान से कांग्रेस को इसका परिणाम भोगना पड़ेगा।

भाई जी ने कहा कि विद्या भारती के विद्यालयों में हर वर्ग और हर मत-पंथ के बच्चे पढ़ते हैं। उनमें देश के प्रति भक्ति और समाज के प्रति संवेदनशीलता पैदा हो, यही हमारा प्रयास रहता है। उन्होने बताया कि इस समय पूरे देश में लगभग 24 हजार विद्यालयों में 1 लाख 35 हजार आचार्यों के संरक्षण में 32 लाख विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। संवेदनशील प्रदेश, वनवासी एवं समुद्रतटीय क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार पर हमारी अधिक प्राथमिकता होती है। वनवासी क्षेत्र के 2 लाख बच्चे विभिन्न स्थानों के विद्यालयों एवं आवासीय विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन विद्यालयों में 50 हजार से अधिक मुस्लिम एवं ईसाई परिवार के बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करते हैं। सम्पूर्ण देश के 80 हजार ग्रामों से विद्या भारती के विद्यालयों में बालक-बालिका आते हैं।

उन्होने कहा कि विद्या भारती श्री दिग्विजय सिंह और उनके जैसे अन्य लोगों को सलाह देती है कि वे ओछी राजनीति न करें और राजनीति में शिक्षा को न घसीटें। ❑

नेहरू ने संघ को गणतंत्र दिवस परेड में आमंत्रित किया था

❑ बलराम दास टंडन

कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी यदि अपने पूर्वजों का भी स्मरण कर लेते तो भी उनको इतनी सद्‌बुद्धि तो आ ही जाती कि वह राष्ट्रवादी और राष्ट्रविरोधी तत्वों की पहचान कर पाते। उन्होंने विशुद्ध राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और आतंकवाद की पाठशाला स्टूडेंट इस्लामी मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) को एक जैसा बता कर न केवल अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है, बल्कि राष्ट्र सेवा में जुटे लाखों-करोड़ों देशभक्तों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाई है। इससे यही साबित होता है कि कांग्रेसजन राहुल गांधी को 'युवराज' आदि की उपाधि देकर उनकी झूठी प्रशंसा तो खूब कर रहे हें, लेकिन उन्हें इतिहास से कुछ सीखने की सलाह नहीं दे रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में उन्होंने जिस प्रकार की टिप्पणी की है उससे यही लगता है कि उन्हें न तो संघ की बेसिक समझ है और न ही उन्होंने संघ के इतिहास को जाना है।

प्रथम प्रधानमंत्री और राहुल गांधी के पड़नाना पंडित जवाहर लाल नेहरू के संघ से वैचारिक मतभेद थे लेकिन उनके शासनकाल में जब 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो संघ की भूमिका से नेहरू विशेष रूप से प्रभावित हुए थे। चीनी हमला प्रारम्भ होते ही संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने ही समाज तथा स्वयंसेवकों को देश की रक्षा के लिये आह्‌वान किया था। हालांकि एक सप्ताह पहले ही श्रीगुरुजी ने चीनी हमले की आशंका जता देश को सतर्क रहने की अपील की थी। असम के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में चीनी सेना के विरुद्ध संघ के स्वयंसेवकों ने ही मोर्चा सम्भाला था। स्थानीय लोगों को ढांढस बंधाए रखने के अलावा बिजली दफ्तरों, दूरभाष टावरों और पुलों की रक्षा के लिये स्वयंसेवकों ने अपनी सेवाएं अर्पित की थी। यही कारण था कि युद्ध के बाद 26 जनवरी, 1963 को नई दिल्ली के राजपथ पर होने वाली परेड के लिये उन्होंने संघ के स्वयंसेवकों को आमंत्रित किया था। इस परेड में स्वयंसेवकों ने संघ के गणवेष में राजपथ की परेड में भाग लिया था। जिन पंडित नेहरू ने संघ की देशभक्ति से प्रभावित होकर उसे राजपथ की परेड में शामिल होने का निमंत्रण भेजा था, आज उन्हीं नेहरू के वंशज राहुल गांधी संघ की तुलना एक आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त संगठन से कर रहे हैं। क्या 1963 से लेकर आज 2010 तक यानी 47 वर्षों के इतिहास से राहुल गांधी ने यही सीखा है? ❑

झूठे शपथ पत्र बनवाए थे तीस्ता सीतलवाड़ ने

सेकुलरवादी किस तरह झूठे मामले बना रहे हैं इसके उदाहरण अब गुजरात से मिल रहे हैं। गुजरात दंगापीड़ितों की तथाकथित लड़ाई लड़ने वाली तीस्ता सीतलवाड़ के सहयोगी रहे रईस खान पठान ने बताया है कि तीस्ता ने दंगा पीड़ित और गवाहों के झूठे शपथ पत्र उसके नाम से बनाकर न्यायालय और जांच एजेंसियों को प्रस्तुत किये थे। खान ने यह सारी जानकारी उच्चतम न्यायालय की ओर से नियुक्त 'स्पेशल इंवेस्टीगेशन टीम' (एसआईटी) को दी है। पठान ने इस बारे में उच्चतम न्यायालय, नानावटी कमीशन को अपनी शिकायत दर्ज कराई है। ❑

मीडिया को बयान लीक करके जांच एजेंसी ने जता दी अपनी मंशा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ. भा. प्रचार प्रमुख मनमोहन वैद्य ने गत 8 जनवरी, 2011 को प्रेस वक्तव्य जारी करके स्वामी असीमानंद के बयान को लेकर मीडिया में आ रही भ्रामक खबरों पर कहा कि स्वामी असीमानंद के बयानों को मीडिया में लीक किया जा रहा है, जो गलत है। यहां प्रस्तुत है श्री वैद्य का उक्त वक्तव्य-

मीडिया में स्वामी असीमानन्द के कबूलनामे के बारे में प्रकाशित हुई रपटों में उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नेता बताया गया है जो न केवल गलत है बल्कि भ्रामक और शरातपूर्ण भी है।

स्वामी असीमानंद का उक्त बयान विरोधाभासों से भरा है, जिसे अदालत में चुनौती दी जाएगी। बहरहाल, जिस तरह से कुछ चुनिंदा सूचना मीडिया को लीक की गई है, वह जांच एजेंसियों और उनके आकाओं की मंशाओं के बारे में संदेह को पुष्ट करती है। यह साफ होता जा रहा है कि जांच एजेंसियों का उद्देश्य कुछ व्यक्तियों और संगठनों की छवि को लांछित करना है। हम उनके इन इरादों की भर्त्सना करते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अनेक अवसरों पर स्पष्ट किया है कि यह हिंसा या आतंक से जुड़ी किसी भी गतिविधि में न भरोसा करता है और न ही उसका समर्थन करता है। संघ हमेशा ही उचित कानूनी प्रक्रिया के तहत की जाने वाली ईमानदार जांच में सहयोगी रहा है।❑

संस्कृत और संस्कृति का संगम

गत 7 से 10 जनवरी तक कर्नाटक की राजधानी बंगलुरू में विश्व संस्कृत पुस्तक मेला आयोजित हुआ। चार दिवसीय यह मेला अद्‌भुत और अतुलनीय रहा। मेले में संस्कृत- प्रेमियों की अपार भीड़ उमड़ी। भीड़ इतनी रही कि पाठकों को पंक्ति में खड़े होकर पुस्तकें खरीदनी पड़ीं। मेले में 125 संस्कृत प्रकाशकों ने भाग लिया।

मेले के उद्‌घाटन से एक दिन पूर्व यानी 6 जनवरी को 'ज्ञान गंगा' नाम से पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित हुई। इसका उद्‌घाटन प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी श्री अनिल कुम्बले ने किया। उन्होंने संस्कृत को सभी भाषाओं का मूलाधार बताते हुए इच्छा व्यक्त की कि वे भी संस्कृत सीखना और बोलना चाहते हैं। इसी दिन संस्कृत ग्राम का उद्‌घाटन कर्नाटक के शिक्षा मंत्री श्री विश्वेश्वर हेगड़े ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री एन. गोपाल स्वामी उपस्थित थे।

7 जनवरी को मेले का उद्‌घाटन कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री वी.एस. येदियुरप्पा ने किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि संस्कृत एक पुरातन एवं अत्यंत समृद्ध भाषा है और यह सभी भाषाओं का मूल है। उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल भाषा नहीं बल्कि संस्कृति है, यदि लोग संस्कृत नहीं पढ़ेंगे तो संस्कृति को भी भूल जाएंगे।

इस अवसर पर अपने राज्य में सर्वप्रथम संस्कृत को द्वितीय राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले उत्तराखंड के मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक को सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि संस्कृत केवल साहित्य की भाषा नहीं बल्कि यह समस्त भारत के जनमानस की, ज्ञान की तथा विज्ञान की भी भाषा रही है। इसी दिन मेले में संस्कृत भाषा की नवप्रकाशित 80 से अधिक पुस्तकों का लोकार्पण विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किया गया। संस्कृत सम्मेलन में देश के कोने-कोने से आए विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया। ❑

गाय अहिंसा बैंक

आदिकाल से ही हिन्दू संस्कृति में गाय पूजनीय रही है। अपनी उपयोगिता के कारण ही गाय भारत के गांवों में विशेष महत्त्व रखती है। आधुनिक युग में जहां अर्थ की व्यापक उपयोगिता को अंगीकार कर लिया गया है, ऐसे में गरीब किसानों के पास आय का कोई अन्य स्रोत नहीं दिखाई पड़ता

मध्यप्रदेश (सागर) के रहने वाले जैन तपस्वी संत आचार्य विद्यासागर जी गौओं को लेकर एक अनूठा प्रयोग कर रहे हैं, जिसका नाम है गाय अहिंसा बैंक। इसमें मुख्य शांति धारा दुग्ध योजना के तहत गौदान के जरिये ली गई गायें क्षेत्र के गरीब ग्रामीणों को मुफ्त में दी जाती है। ग्रामीण उन गायों को पालकर परियोजना के संयंत्र में दूध बेचते हैं जिससे उनकी रोजी-रोटी चलती है और संयंत्र में तैयार डिब्बाबंद दूध और दुग्ध उत्पाद चीजें उचित दामों पर बेचे भी जाते हैं।

इस पहल से एक ओर जहां ग्रामीण आर्थिक मामलों में आत्मनिर्भर बन रहे हैं, वहीं दूसरी ओर क्षेत्र में शुद्ध दही तथा अन्य दुग्ध उत्पाद उपलब्ध हो रहा है। वास्तव में आचार्य जी का प्रयास कृषकों को गौ पालन विधि में प्रोत्साहित कर उनकी आत्मनिर्भरता को और अधिक सुदृढ़ बना रहा है। ❑

प्राचीन भारत की उपलब्धियां दिखाने वाला संग्रहालय

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में कानेरी गांव स्थित एक हजार वर्ष पुराने सिद्धगिरि आश्रम के पास प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियां दिखाने वाला अनूठा संग्रहालय है जिसमें प्राचीन काल में भारत में हुई प्रगति को दर्शाया गया है। यहां बनाई गई कृत्रिम गुफा में शल्य चिकित्सक सुश्रुत, खगोलशास्त्री आर्यभट्ट, प्रथम भवन इंजीनियर भगीरथ, रसायन शास्त्री चरक, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान के कार्यों से जुड़े नमूने (मॉडल) प्रदर्शित किये गए हैं।

चार एकड़ की इन गुफाओं के अलावा भारत का ग्रामीण जीवन भी दिखाया गया है। यहां खेतों में काम करते किसान, फैसला सुनाते सरपंच, कुश्ती लड़ते पहलवान आदि की मूर्तियां लगी हुई है। संग्रहालय को बनवाने वाले पूज्य अदृश्य काड सिद्धेश्वर स्वामी ने बताया कि अंग्रेजों के शासन से पहले हमारा गांव आत्मनिर्भर था। इस संग्रहालय से होने वाली आय को आश्रम के सिद्धगिरि अस्पताल पर खर्च किया जाता है। इससे आसपास के लोगों का इलाज पर होने वाला खर्चा कम हुआ है।❑

स्वामीनारायण 'अक्षरधाम'

❑ सुभाष चंद्र सूद

सनातन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और आध्यात्मिक रूप में निर्मित 21वीं शताब्दी का प्राचीन एवं अर्वाचीन तीर्थ धाम जहां पत्थर भी भव्यता के गीत गाते हैं कला शाश्वत नि:सीम है। जो हमारे अतीत का उत्सव है, वर्तमान की प्रेरणा है और हमारे भविष्य के लिये एक आशीर्वाद है। सचमुच यह भारत का राष्ट्रीय गौरव तिलक है।

10 हजार वर्ष पूर्व की गौरवशाली भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रतीक है 'अक्षरधाम'। जो विभिन्न मुद्राओं में पूर्ण कद के 148 गजराजों की गजेंद्र पीठ पर निर्मित है। मंडोवर की बाहरी दीवार पर प्राचीन भारत के आचार्यों, ऋषियों और अवतारों के मनोहर शिल्प दृश्यमान होते हैं। मंडोवर के शीर्ष पर पारम्परिक शिखर और गुम्बद पर स्वर्णिम कलश पर लहराते ध्वज, दर्शकों को इस प्रकार सम्मोहित करते हैं कि उसे लगता है कि वह किसी नए ब्रह्माण्ड की सैर कर रहा है।

कहां है यह सम्मोहक पावन तीर्थ धाम? दिल्ली में पावन यमुना तट पर जहां उबड़-खाबड़ झाड़ियों से युक्त बंजर जमीन थी वहां मात्र पांच वर्ष में पलक झपकते कल्पनातीत अक्षरधाम का सृजन, विश्व का महान आश्चर्य है। परन्तु इस अद्‌भुत चमत्कार का निर्माण मात्र पांच वर्ष में कैसे सम्भव हो पाया?क्या इसके सृजन हेतु देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा का अवतरण तो नहीं हुआ था? इसका एकमात्र उत्तर है अक्षरधाम का श्रेष्ठतम आयोजन, उत्कृष्ठ प्रबंधन एवं पूर्ण समर्पण भक्तिमय।

मुख्य भवन लाल गुलाबी सेंड स्टोन तथा सफेद संगमरमर से निर्मित 141 फुट ऊंचा, 315 फुट चौड़ा तथा 356 फुट लम्बा है। वहां 234 नक्काशीदार स्तम्भ, 9 विशाल गुम्बद, 20 शिखर तथा 20 हजार से भी ऊपर तराशी हुई अत्यंत मनोहर कलाकृतियां हैं। स्मारक तीन दिशाओं में पवित्र नारायण सरोवर से घिरा हुआ है जहां विश्व के 151 पवित्र तीर्थ, नदियों-झीलों का जल भरा हुआ है। डेढ़ किलोमीटर लम्बा दो मंजिला परिक्रमा पथ स्मारक के चारों ओर रत्नहार सदृश्य सुशोभित है।

अक्षर धाम परिसर में दो विशाल प्रदर्शन कक्ष, भव्य आईमेक्स थियेटर, अद्‌भुत संगीतमय रंगीन फौव्वारा, विशाल सांस्कृतिक उद्यान, अलंकारिक स्वागत मयूरद्वार, उच्चस्तरीय प्रेमवती आहार गृह, अक्षरहार बुकस्टाल आदि कक्ष दर्शकों को रोमांचिक अनुभूति कराते हैं।

प्रदर्शन का दूसरा महत्वपूर्ण भाग है– 'संस्कृति विहार' जो अक्षरधाम भूमि पर बना हुआ एक अजूबा संसार है। मात्र 14 मिनट में रोमांचक नौकायात्रा करता हुआ यात्री 10 हजार पूर्व भारत की गौरवशाली संस्कृति को सरस्वती नदी के तट पर हू-ब-हू संजीव देखकर रोमांच की पराकाष्ठा का अनुभव करता है।

800 प्रतिमाएं संजीव होकर, रामायण, महाभारत, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, विक्रमादित्य हर्षकालीन भारत, अजन्ता, ऐलोरा की संजीव प्रस्तुतियां, प्राचीन भारतीय इतिहास की अमर वैभवपूर्ण धरोहर पर मंत्रमुग्ध रूपी दृष्टि केन्द्रित करती है। वेदकालीन बाजार अर्थव्यवस्था, तक्षशीला विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था, महर्षि चरक का औषधि आश्रम, सूश्रत का सर्जरी कक्ष, वैदिक वैज्ञानिक ऋषियों के विविध आविष्कार, भारतीय संगीत, वेदकालीन अस्त्र शस्त्र, देखते समय नौका यात्री अपने वर्तमान को भूल कर वैदिक युग में स्वयं को खड़ा हुआ पाता है।

22 एकड़ में फैले हुए विशाल भारत सांस्कृतिक उद्यान में 9 लाख से अधिक पेड़-पौधे, फूलों और लताओं की दुनिया अनूठी है। पर्यावरण की दृष्टि से अक्षरधाम की यह एक मौलिक प्रस्तुति है। उद्यान के बीच में पूर्णकद की 65 कांस्य प्रतिमाओं के निकट से गुजरता हुआ यात्री, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीरों, महानायकों, वीरांगनाओं देशभक्तों के मूक

संदेशों का एहसास करके गौरवभाव से भर उठता है। सूर्यरथ के शक्तिशाली अग्नि सदृश्य घोड़े, चन्द्ररथ के मनमोहक हिरण किसी दैवीशक्ति भाव का संचार करते हैं।

कौन है इस भव्य गौरवपूर्ण निर्माण का प्रेरक, जिसने भारत के दिल, दिल्ली में गत 1000 वर्ष के पतनशील हिन्दू वैभव को पुन: अपनी प्रेरक सृजनशीलता से प्रस्थापित किया। इसके प्रेरक हैं बालयोगी नीलकण्ठ वर्णी, जो कालांतर में 'भगवान स्वामिनारायण' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने अयोध्या में जन्म लेकर नंगे पांव समग्र भारत की 12 हजार कि.मी. लम्बी यात्रा की। उत्तर में हिमालय, मानसरोवर, कैलाश, आसाम के घने जंगलों से होते हुए जगन्नाथपुरी की रथयात्रा के पश्चात सेतुबंध रामेश्वर की यात्रा पूरी कर गुजरात में प्रवेश किया तथा वहां आचार्य रामानंद सम्प्रदाय में प्रतिष्ठित होकर भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप में विश्वविख्यात हुए।

भगवान नीलकण्ठ द्वारा प्रेरित स्वामिनारायण सम्प्रदाय आज भारत सहित विश्व के अनेक देशों में शाश्वत भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक वैविध्य का सफलतापूर्वक प्रचार कर रहा है। इसके वर्तमान उत्तराधिकारी प्रमुख स्वामी जी महाराज हैं जिनके कुशल एवं सुयोग्य मार्ग निर्देशन में वर्तमान अक्षरधाम का निर्माण संकल्प अत्य अल्पावधि में पूर्ण हो सका है।

समग्र भारत के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक, पत्रकार, कलाकार प्रसिद्ध व्यवसायी, राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता इस विश्व प्रसिद्ध हिन्दू प्रतिष्ठान को देखकर स्वयं को धन्य अनुभव करते हैं। हममें भी प्रत्येक भारतवासी को अपनी राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर की इस अनमोल थाती को यथा समय देखकर धन्यता अनुभव करनी चाहिये।❑

अरबों का काला धन चला जाता है बाहर

भारत ने आजादी के बाद से 2008 तक 20,556 अरब रुपये (462 अरब डॉलर) भ्रष्टाचार, अपराध और टैक्स चोरी के कारण गंवाए हैं। वाशिंगटन स्थित आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ समूह ग्लोबल फाइनेंशियल इंटेग्रिटी (जीएफआई) द्वारा जारी रिपोर्ट 'द ड्राइवर्स एंड डायनामिक्स ऑफ इलिसिट फाइनेंशियल फ्लो फ्रॉम इंडिया 1948-2008' में कहा गया है कि 1991 में भारत की सुधरती अर्थव्यवस्था के बावजूद गैर-कानूनी तरीके से देश से बाहर भेजी जाने वाली रकम में बहुत बढ़ोतरी हुई है। रिपोर्ट के अनुसार भारत को 462 अरब डॉलर रुपये का नुकसान हुआ है, जो भारत पर विदेशी कर्ज (230 अरब डॉलर) का दोगुना है।

संस्था के निदेशक रेमंड्स बेकर के मुताबिक इतनी बड़ी रकम देश से बाहर भेजे जाने के कारण ही भारत में अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि भारत के भ्रष्टाचारियों ने विकसित देशों को छोड़कर उन देशों में धन जमा करना शुरू किया, जहां इस मामले में पूरी गोपनीयता बरती जाती है। पहले इन देशों के बैंकों में जमा कुल रकम दुनिया भर के बैंकों में जमा रकम का 36.4 फीसदी हुआ करती थी, जो 2009 में बढ़कर 54.2 फीसदी हो गई है। विदेशों में भेजी जाने वाली यह रकम भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 40 फीसदी है और टूजी स्पेक्ट्रम घोटाले की कुल रकम का 12 फीसदी। विदेशों में अवैध रूप से भेजे जा रहे भारतीय धन में हर साल 11.6 फीसदी की दर से बढ़ोतरी हो रही है। रिपोर्ट के बारे में प्रख्यात अर्थशास्त्री डेव कार ने कहा, 'भारत की अवैध रूप से चल रही अर्थव्यवस्था कितनी बड़ी है यह इस रिपोर्ट से जाहिर है।' ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी वर्ष 2010 के भ्रष्टाचार सूचकांक में भारत 87वें स्थान पर पहुंच गया है। जबकि 2009 में वह 84वें स्थान पर था। जाहिर है, ये आंकड़े देश के विकास की दिशा और दशा दोनों ही जाहिर करने में सक्षम हैं। ❑

विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करने की साजिश रच रही हैं : भैयाजी जोशी

'विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करने की साजिश रच रही हैं। ऐसी शक्तियों की साजिशें कहीं आतंकवाद, कहीं नक्सलवाद और कहीं माओवाद के रूप में देखने को मिल रही हैं। इन शक्तियों में चीन प्रमुख है। चीनी ड्रैगन आज हमारे देश के लिये सबसे बड़ा खतरा है। वह हमारी सीमाओं पर बसे जनजातीय और वनवासी समाज में घुसपैठ कर उनको देश के खिलाफ वरगला रहा है और उन्हें भारत के खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है।' यह कहना है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेशराव उपाख्य भैयाजी जोशी का। वे गत दिनों उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के झांझरा स्थित वनवासी कल्याण आश्रम में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय जनजाति सम्मेलन एवं युवा महोत्सव को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

भारत में जनजातीय और वनवासी समाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए भैयाजी ने कहा कि भारतीय वनवासी समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज ने प्राचीन काल से ही देशभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस समाज ने हर समय अन्याय और अत्याचार का दमन किया है। चाहे मुगल सल्तनत रही हो या फिर अंग्रेजों की गुलामी का काल, इसने सबसे जमकर लोहा लिया। छत्रपति शिवाजी महाराज और फड़केजी जैसे देशप्रेमियों को इस समाज ने जो मदद की वह इतिहास में दर्ज है। भैयाजी ने कहा कि भारत की परम्परा कभी भी शोषण की नहीं रही और इस समाज में शोषण को बर्दाश्त करना भी अपराध माना जाता है। लेकिन इस सीधे-साधे समाज का आज जिस तरह से शोषण किया जा रहा है, वह चिंतनीय है।

भैयाजी ने कहा कि चीन हमारी सीमाओं पर बसे वनवासी व जनजातीय समाज को वरगलाकर सीमाओं में घुसपैठ करने का प्रयास कर रहा है। आज नक्सलियों, माओवादियों व आतंकियों का कोई सिद्धान्त नहीं रह गया है। वे 'येन केन प्रकारेण' सत्ता पाना चाहते हैं और यही कारण है कि आज वे नक्सलवाद की आड़ में सत्ता की लड़ाई लड़ रहे हैं। हमारे देश का वनवासी जनजातीय समाज इनके कुचक्र का शिकार हो गया है। आज की सबसे बड़ी जरूरत इस समाज की इन शक्तियों से रक्षा करना है। ❑

नहीं रुकी 46 सालों से रामधुन

गुजरात के जामनगर शहर में एक ऐसा मंदिर है जहां गर्मी, सर्दी और बरसात, हर मौसम में श्री राम जय राम जय जय राम की ध्वनि पिछले 46 सालों से लगातार गूंज रही है। मंदिर की इस विशेषता के कारण इसका नाम गिनीज बुक में भी दर्ज हो चुका है। बाल हनुमान नाम के इस मंदिर में रोज नियमानुसार अलग-अलग पालियों में राम के नाम की प्रार्थना की जाती है। इसके लिये बाकायदा लोगों के नाम तय किये जाते हैं। उनके नाम एक दिन पहले नोटिस बोर्ड पर भी प्रदर्शित होते हैं, जिसे देखकर लोग अपने समय का ध्यान रखते हैं। मंदिर के संरक्षक जयसुखभाई गुसानी बताते हैं इस मंदिर का निर्माण भिकुजी महाराज ने 1961 में किया था। इसके तीन साल बाद उन्होंने अनुयायियों के साथ मिलकर लगातार राम धुन की प्रार्थना करने की शुरुआत की। तब से लेकर अब तक यह ध्वनि यहां गूंजती आ रही है।

भूकम्प में भी नहीं रुकी थी प्रार्थना

प्रार्थना में बच्चे और महिलाएं भी भाग लेती हैं। मंदिर की प्रार्थना साल 2001 के गुजरात भूकम्प के दौरान भी नहीं रुकी थी। प्रार्थना में विघ्न पड़ने से बचने के लिये मंदिर न्यास की तरफ से रात और दिन के लिये अलग से चार-चार गायकों को सुरक्षा के तौर पर रखा गया है। गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के प्रबंधकों ने इसे 1984 और 1988 में दो बार प्रमाण पत्र भी दे चुके हैं।❑

अनाथ बच्चियों का मसीहा

न रहने के लिये ढंग का घर है और न ठीक से खाने की दो जून की रोटी। मगर इसके बावजूद वे किसी लावारिस शिशु को तड़पते नहीं देख सकते। गोपाल पासी और उसकी पत्नी सुमित्रा दो ऐसे नाम हैं जिनकी चर्चा आज पूरे क्षेत्र में होती है। ये दोनों गोपालगंज जिले के मीरागंज नगर के हथुआ मोड़ के झोपड़पट्टी के निवासी हैं। गोपाल पासी रिक्शा चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं, लेकिन इसके बावजूद वह तीन लावारिस बच्चियों को मौत के मुंह से निकालकर उनकी परवरिश कर रहे हैं।

इक्कीस वर्षीय सपना, दो वर्षीय मनीषा और पांच माह की पुष्पा के लिये यह दम्पति किसी देवदूत से कम नहीं है। अपनी माली हालत काफी कमजोर होने के बावजूद वे उन बच्चियों को उतना ही लाड़-प्यार से देख-रेख कर रहे हैं जितना कोई भी एक सामान्य मां-बाप करता है। महंगाई के इस दौर में जब किसी को अपने बच्चों तक की सही परवरिश करना कठिन हो गया है। ऐसे में परित्यक्त अनाथ बच्चियों को पारिवारिक माहौल में पालन करना अपने आप में एक पुण्य कार्य है।

इनमें से सबसे बड़ी 21 वर्षीया सपना की शादी तो उन्होंने अपने ही जाति के अच्छे लड़के से कर दी है। गोपाल इन बच्चियों की परवरिश विगत् 25 वर्षों से करते आ रहे हैं। इतना कुछ करते रहने के बावजूद उन्होंने किसी से एक फूटी कौड़ी भी न ली है। सुमित्रा देवी के अनुसार इन लड़कियों को देखकर पता नहीं क्यों इतना प्यार उमड़ता है कि वह इनसे एक पल भी अलग रहना नहीं चाहती। हालांकि इनका 24 वर्षीय एकमात्र लड़का नटवा भी है जो इन तीनों को सगी बहनें ही मानता है। ❑

किसानों के वृक्ष मित्र

छत्तीसगढ़ के उत्तरी पहाड़ी इलाके अंबिकापुर-सरगुजा में वृक्षमित्र के नाम से चर्चित एक शख्स किसानों की भलाई करने और पेड़ों को हरियाली देने में जुटा है। ओपी अग्रवाल नाम का यह आदमी हालांकि एक राजनीतिक दल से जुड़ा है, लेकिन उनके विराट लक्ष्य को देखते हुए राजनीतिक विरोधी भी उनका सम्मान करते हैं। खेती में अभिनव प्रयोग, पर्यावरण संरक्षण और सहकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान छिपा नहीं है। किसान की बेहतरी के बारे में सोचने के कारण उनके लिये हमेशा कुछ नया करते रहने की उन्होंने ठानी है।

ओपी अग्रवाल ने पर्यावरण संरक्षण के लिये दशकों पहले काम शुरू कर दिया था, लेकिन पहली बार वर्ष 1990 में उनके काम को सम्मान मिला, जब केन्द्र सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया। हरे-भरे छत्तीसगढ़ में कम होती हरियाली के खिलाफ इन्होंने सरगुजा और आसपास के अन्य इलाकों में किसानों की निजी भूमि, सरकारी भूमि और पंचायतों की करीब पांच हजार हेक्टेयर जमीन पर एक करोड़ से अधिक पेड़ लगाने में सहयोग किया।❑

बैलों से चलने वाला पम्प

खेतों में सिंचाई के लिये पहले तो बैलों से चलने वाले रहट तथा अन्य उपकरण काम में लिये जाते थे। लेकिन ये बहुत धीमी गति से पानी निकालते थे, इसलिये रहट के स्थान पर डीजल से चलने वाले 'वाटर पम्प' आ गए। इससे सिंचाई आसान तो हुई पर बैल बेकार हो गए और डीजल का खर्च भी बढ़ गया। इस समस्या ने कानपुर के एक कम्प्यूटर व्यापारी विवेक चतुर्वेदी को चिंतित कर दिया। एक दिन उन्होंने अपने व्यवसाय को ताला लगा कर बीस बीघा जमीन उरियर गांव में खरीद ली।

उन्हें पता लगा कि कानपुर के भौती गोशाला ने बैलों से चलने वाला वाटर-पम्प बनाया है। श्री विवेक वह पम्प खरीद लाए और उसे उन्नत करने की तरकीब खोजने लगे। डेढ़ साल तक प्रयोग करने के बाद उन्होंने पम्प में एक गियर बॉक्स लगा दिया, जिससे पम्प की क्षमता सौ गुना बढ़ गई। अब यह पम्प जमीन के 150 फुट नीचे के पानी को खींच लेता है और एक घंटे में 25 हजार लीटर पानी खेत को दे देता है। अब उरियर गांव के सभी किसानों ने बैलों से चलने वाले ये पम्प लगा लिये हैं और बैलों से अपने खेतों की सिंचाई करते हैं।

ऐसे में एक लाख पम्प यदि लगा दिये जाएं तो हर साल 5 करोड़ लीटर डीजल बचाया जा सकता है और दो लाख बैलों का सदुपयोग भी हो सकता है। व्यक्ति में यदि इच्छा शक्ति हो तो वह देश-हित में किसी भी समस्या का समाधान निकाल सकता है।❑

उपेक्षित

भारत की धरती पर क्यों है,
भारत की हर बात उपेक्षित।
अंग्रेजी मस्तक पर बैठी,
हिन्दी की हर बात उपेक्षित।
पाश्चात्य सभ्यता में रच बसकर,
जीवन के उत्सव का नर्तन।
हर उत्सव पर डिस्को डिजे,
शहनाई की गूंज उपेक्षित।
जन्मदिवस को करते विस्मृत,
और मनाने लगे बर्थडे।
केक काट कर दीप बुझाया,
दीप ज्ञान का हुआ उपेक्षित।
जनता के वोटों से चुनकर,
संसद में पहुंचे नेता... जी।
वोटों से ही इनको मतलब,
जनसेवा का भाव उपेक्षित।
देश की इज्जत, देश की रक्षा,
से कोई सरोकार नहीं।
घोटालों में व्यस्त अहर्निश,
राष्ट्रप्रेम का भाव उपेक्षित।

– **सुरेंद्र पाल वैद्य**, मण्डी

आजादी कैसे पाई जाती है?

क्या तुम्हें पता है?
आजादी कैसे पाई जाती है।
शीश कटाने का सौदा ये
सीने पर गोलियां खाई जाती हैं
क्या तुम्हें पता है?
आजादी कैसे पाई जाती है
झांसी की रानी बनकर
अंग्रेजों को मुंह की खिलाई जाती है
फिर हंसते-हंसते वीर गति पाई जाती है
क्या तुम्हें पता है?
आजादी कैसे पाई जाती है
राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह बनकर
फांसी के फंदे पर झूल
हंसते जान गंवाई जाती है।
क्या तुम्हें पता है?
आजादी कैसे पाई जाती है
राम प्रसाद 'विस्मिल' बनकर
सरफरोशी की तमन्ना दिल में लाई जाती है।
तन, मन, धन से मातृभूमि की,
रक्षा की शपथ खाई जाती है।

– **हेमराज राणा**, मिल्ला, सिरमौर

हे शिव! हे भोले!! हे त्रिपुरारी!!!

हे शिव! हे भोले!! हे त्रिपुरारी!!!
तुम्हारी शक्ति जाने, ये सृष्टि सारी
तुमने निर्धन को, धनवान बनाया।
तुमने ही शीश पर चंद्र चमकाया।।
नंदी तुम्हारे लिये, सवारी बन के आया।।
जिसने तुम्हें पूजा, मनचाहा वर पाया।।
आपने अपने भक्तों को खुशियों से महकाया।
आपकी भक्ति से सबने, बिगड़ा काम बनाया।।
हे शिव! हे भोले बाबा! तुम्हें लाखों प्रणाम।
आप बनाए हम सबके, बिगड़े काम।।
एसएस दास मांगे, तुम्हारी भक्ति में वरदान।
पूर्ण करो सबके मनोरथ व बिगड़े काम।
'मातृवन्दना' पाठकों व शिव भक्तों के पूर्ण हो अरमान।
पूर्ण करें शिव भोले! सबके मनवांछित काम।।
आओ हम सब मिलकर करें, भोले बाबा को प्रणाम।
हे ईश्वर! तू पूर्ण कर, हम सबके अरमान।।
हे शिव भोले बाबा, तुम्हें प्रणाम, तुम्हें प्रणाम।
तू ही बनाए, हमारे सभी बिगड़े काम।।

– **एसएस दास, सोलन**

नारी : प्रेम और वात्सल्य का बेजोड़ स्तम्भ

❑ अनिल 'मासूम'

नारी इस दैवीय सृष्टि का मूल एवं सौन्दर्यपूर्ण स्तम्भ है, जो न केवल सृष्टि के विकास में अपना आधारभूत योगदान देती है अपितु उसमें सौन्दर्य के रंग भर कर उसे नया रूप भी प्रदान करती है। सृष्टि में यदि प्रेम और वात्सल्य का यह स्तम्भ न हो तो इसके विकास तो दूर उसकी काया की भी कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि पुरुष हर कार्य, हर क्षेत्र में सक्षम नहीं। कहा भी गया है कि जहां सूई का काम हो वहां तलवार का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि तलवार सूई का कार्य करने में असमर्थ है, वही स्थिति समाज में पुरुष वर्ग की है। प्रकृति ने पुरुष को स्वभाव और शारीरिक दृष्टिकोण से सबल एवं मजबूत बनाया है, किन्तु उसकी यह सबलता एवं मजबूती हर स्थान पर हर कार्य को सफलता पूर्वक कर दे ऐसा सम्भव नहीं क्योंकि कुछ कार्य कोमलता से ही साध्य है, जो मात्र नारी के पास है।

सृष्टि के विकास में नारी मां, बहन, बेटी, पत्नी आदि कई वात्सल्यपूर्ण रूपों के माध्यम से अपना योगदान पिछली कई सौ शताब्दियों से बिना रुके, बिना थके दे रही है। एक मां के रूप में नारी जहां प्रेम एवं सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति है वहीं एक बेटी और बहन के रूप में अपनी चंचलता एवं चुलबुलाहट से पारिवारिक तारतम्यता को सुदृढ़ता प्रदान करती है। एक पत्नी के रूप में नारी पुरुष के पूरक के रूप में कार्य करती है। इसके बिना पुरुष अपूर्ण एवं अधूरा है। नर-नारी दोनों के सहयोग से ही दाम्पत्य जीवन का संचालन होता है तथा सृष्टि पड़ाव दर पड़ाव विकास करती है।

स्नेह एवं प्रेम की इस प्रति मूर्ति के ऊपर पुरुष वर्ग सदैव ही अपना वर्चस्व स्थापित करता आया है तथा पुरुष के इस व्यवहार को नारी ने सदैव अपनी कोमलता, प्रेम एवं वात्सल्य से सही राह की ओर मोड़ा है। यही कारण है कि सामाजिक सम्बंध पूर्ण सफलता एवं सबलता से बंधे हुए हैं किन्तु इतिहास इस बात का भी साक्षी रहा है कि जब-जब पुरुष वर्ग नारी को अपनी क्रूरताओं का शिकार बनाने का प्रयास करता रहा है तब-तब यही वात्सल्य एवं प्रेम विष बनकर दुष्टों की सांसों को सदा के लिये खामोश करता आया है। आने वाला समय भी इसी बात की गवाही देता है कि नारी की कोमलता को यदि कोई उसकी कमजोरी समझता है तो वैज्ञानिकता एवं भौतिकता से परिपूर्ण इस सृष्टि में उससे बड़ा मूर्ख एवं अज्ञानी कोई नहीं होगा।

वर्तमान समाज एवं एक नई दिशा एवं दशा की ओर बढ़ रहा है। एक ओर जहां वात्सल्य की यह प्रतिमूर्ति हर क्षेत्र में जीतोड़ मेहनत कर पुरुष के साथ कंधे से कंधा, एवं कदम से कदम मिलाकर आगे सफलता की नई परिधियां बना रही है वहीं दूसरी ओर इस प्रेम प्रतिमूर्ति की घटती दर विश्व को विनाश के गर्त के दिग्दर्शन भी करवा रही है। यदि यही स्थिति रही तो संसार के विनाश को कोई नहीं रोक सकता। फिर न यह सृष्टि रूपी बगीचा होगा न उसमें नारी रूपी सुन्दर फूल ही खिलेगा, इसलिये इस सौंदर्य से परिपूर्ण पुष्प की रक्षा एवं सहायता अति आवश्यक है तभी विश्व में प्रेम का दीपक जलता दिखेगा।

'प्रेम वहीं, जहां वात्सल्य है
और कहीं पाक मुहब्बत प्यारी है
सृष्टि का नाम सम्भव इसी से
जिसका नाम नारी है।' ❑

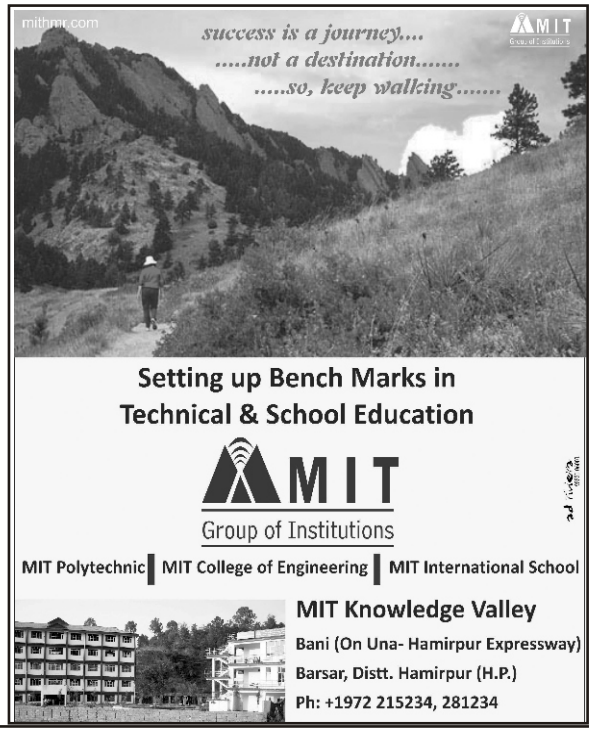

दिशा ज्ञान और स्वास्थ्य

❑ डॉ. अनुराग विजयवर्गीय, एम.डी. (आयु.)

ज्योतिष, वास्तु, तंत्र-मंत्र इत्यादि प्राच्य-विद्याओं में जितना महत्व दिशा-ज्ञान को प्रदान किया गया है, उससे भी कहीं अधिक स्वास्थ्य के संदर्भों में दिशा-ज्ञान की अपरिहार्यता परिलक्षित होती है। ज्ञातव्य है कि हमारे पूर्वजों को अन्यान्य सूक्ष्म-बिन्दुओं के साथ-साथ दिशाओं का हमारे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का भी विशद ज्ञान था, जिसका अपने दैनंदिन जीवन में उपयोग करते हुए वे शतायु हुआ करते थे। हमारी स्वदेशी चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के महर्षियों ने द्रव्य-संग्रह के अंतर्गत दिशा का भी समावेश किया है।

आचार-मयूख में वर्णन मिलता है कि पूर्व दिशा की तरफ सिर करके सोने से विद्या की प्राप्ति होती है। दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोने से धन तथा आयु की वृद्धि होती है। पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिंता होती है। उत्तर की तरफ सिर करके सोने से हानि तथा मृत्यु होती है तथा आयु क्षीण होती है। शास्त्रों में ऐसे रोचक संदर्भ भी मिलते हैं, जिनमें कहा गया है कि अपने घर में पूर्व दिशा की तरफ सिर करके सोना चाहिये। ससुराल में दक्षिण की तरफ सिर करके और परदेस में पश्चिम दिशा की ओर सिर करके सोने का निर्देश भी किया गया है। स्मरण रहे कि उत्तर दिशा की तरफ सिर करके कभी नहीं सोना चाहिये।

शयन के संदर्भ में ही आयुर्वेदीय ग्रंथ अष्टांग-संग्रह में भी पूर्व एवं दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोने का निर्देश किया गया है- प्राग्दक्षिण शिरा:। इसलिए सदा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की तरफ सिर करके सोना चाहिये। उत्तर-पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती है तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।

वैज्ञानिक पक्ष : भारतीय वांगमय के शयन-दिशा विषयक तत्वों को अर्वाचीन विज्ञान भी मुक्त कंठ से स्वीकार कर रहा है। नव्य मत के अनुसार पृथ्वी पर दो ध्रुव हैं। उत्तरी एंव दक्षिणी ध्रुवों के मध्य विद्युत तरंगें प्रवाहमान होती रहती हैं। विज्ञान के अनुसार उत्तरी ध्रुव में धन- विद्युत का तथा दक्षिणी ध्रुव में ऋण विद्युत का प्रवाह रहता है। विज्ञान यह भी मानता है कि मानव के उर्ध्व क्षेत्र अर्थात् सिर में धनात्मक विद्युत का प्रवाह होता है जबकि निम्न क्षेत्र में अर्थात् पैरों की ओर ऋण विद्युत का प्रवाह रहता है। विज्ञान का यह पहलू भी सर्व विदित ही है कि सम आवेश वाली विद्युत परस्पर आकर्षण रहित होती है और एक दूसरे से दूर भागती है जबकि विषम आवेश वाली धन एवं ऋण विद्युत एक-दूसरे के प्रति आकर्षित रहती है। प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि जब व्यक्ति दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोता है तो उसके सिर की धन-विद्युत एवं दक्षिणी ध्रुव की ऋण विद्युत के मध्य आकर्षण भाव होने के कारण दोनों के मध्य एक सहज प्रवाह स्थापित हो जाता है, फलस्वरूप मानव शरीर भी बिना किसी गतिरोध के प्रगाढ़-निद्रा के आगोश में समाने लगता है। यदि व्यक्ति के सिर की दिशा और ध्रुव के विद्युत आवेश के मध्य विषम-स्थिति होती है तो उनके मध्य सहज-प्रवाह का भाव नहीं हो पाता, फलस्वरूप गतिरोध की उत्पत्ति के कारण व्यक्ति का मानस-पटल भी आंदोलित होता रहता है और अनिद्रा, सिर दर्द, बुरे-स्वप्न आना, स्मरण-शक्ति में कमी आना आदि लक्षणों की उत्पत्ति होने लगती है।

दंत धावन इत्यादि कर्म : हमेशा पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करते हुए ही दंत-धावन अर्थात् दातुन-पेस्ट करना चाहिये। पश्चिम और दक्षिण दिशा की ओर चेहरा करते हुए दंत-धावन नहीं करना चाहिये।

आचार-मयूख नामक ग्रंथ के अनुसार पूर्व दिशा की ओर चेहरा करके दंत-धावन करने से धैर्य, सुख और शरीर को आरोग्य प्राप्ति होती है। दक्षिण-दिशा की ओर मुख करने से कष्ट और पश्चिम की ओर मुख करने से पराजय प्राप्त होती है। उत्तर की ओर मुख करने से गो, स्त्री और परिजनों का नाश होता है। पूर्वोत्तर अथवा ईशान दिशा की ओर मुख करने से सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि होती है। क्षौर-कर्म अर्थात् हेयर कटिंग पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके ही कराना चाहिये।

शौच इत्यादि कर्म : मल-मूत्र त्याग करने के संदर्भ में भी व्यापक प्रकाश डाला गया है। विष्णु पुराण, याज्ञवल्क्य-स्मृति, वशिष्ठ-स्मृति नामक ग्रंथों में बताया गया है कि दिन में उत्तर दिशा की ओर तथा रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुख करके मल मूत्र का त्याग करना चाहिये। ऐसा करने से आयु क्षीण नहीं होती। प्रात:काल पूर्व दिशा की ओर तथा रात्रि में पश्चिम दिशा की ओर मुख करके मल-मूत्र का त्याग करने से आधासीसी अथवा माइग्रेन नामक रोग पैदा होता है। शास्त्रों में ऐसे संदर्भ भी सुलभ होते हैं कि मरणासन्न व्यक्ति का सिर उत्तर दिशा की तरफ रखना चाहिये और मृत्यु के बाद अंत्येष्टि संस्कार के समय उसका सिर दक्षिण की तरफ रखना चाहिये। आज भी यह मान्यता व्यावहारिक रूप में दृष्टिगत होती है। ऐसे निर्देश भी किए गए हैं कि धन सम्पत्ति चाहने वाले मनुष्य को अन्न, गौ, गुरू, अग्नि और देवता के स्थान के ऊपर नहीं सोना चाहिये। ❑

संघ पर निशाना - कांग्रेस का भीतरी डर

❑ डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

चर्च द्वारा त्रिपुरा में शांतिकाली जी महाराज की हत्या और ओडीशा में स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती की हत्या की पृष्ठभूमि में कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रहार करने की रणनीति को समझना आसान हो जाएगा। इन दोनों हत्याओं के मामले में कांग्रेस का रवैया आश्चर्यजनक रूप से चर्च के पक्ष में रहा। सोनिया गांधी और उनकी चर्च समर्थक शक्तियां किसी भी तरीके से शीघ्रातिशीघ्र राहुल गांधी को देश के प्रधानमंत्री के पद पर बिठा देना चाहती है। देश में छोटे-मोटे राजनीतिक हितों वो कुछ क्षेत्रीय दलों का सहयोग उन्होंने किसी न किसी तरीके से प्राप्त कर ही लिया है। लेकिन सोनिया और चर्च दोनों जानते हैं कि संघ परिवार और देश की राष्ट्रवादी शक्तियां किसी न किसी रूप में भारत की राजनीति के केन्द्र बिन्दु तक पहुंच गई हैं इसलिए संघ को हटाए बिना राहुल गांधी को प्रधानमंत्री नहीं बनाया जा सकता और न ही भारत में चर्च की रणनीति सफल हो सकती है। यदि राहुल गांधी प्रधानमंत्री नहीं बनते तो सोनिया गांधी की 45 साल पहले इंग्लैंड के कैम्ब्रिज से दिल्ली में प्रधानमंत्री के घर तक पहुंचने की सारी मेहनत बेकार जाएगी और चर्च के व पश्चिमी शक्तियों के भारत की पहचान बदलने के सारे स्वप्न धूलि धूसर हो जाएंगे। इसलिए सोनिया कांग्रेस ने देश में मुस्लिम लीग के बाद फिर से मुस्लिम कार्ड खेलना शुरू कर दिया। आज तक कांग्रेस मुसलमानों को हिन्दुओं के काल्पनिक भय से भयभीत रखकर अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति पर चल रही थी और उसे इसमें सफलता भी मिल रही थी। मुस्लिम समुदाय का ठोस वोट बैंक कांग्रेस की सबसे बड़ी शक्ति थी। लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जब मुस्लिम समुदाय से सीधे संवाद रचना प्रारम्भ कर दी तो कांग्रेस के नीचे से जमीन खिसकने लगी। इस पृष्ठभूमि में मुसलमान या इस्लामपंथी विवाद का मुद्दा बन जाता है। कांग्रेस एवं साम्यवादियों की दृष्टि में इस देश के मुसलमान एक अलग राष्ट्र है, इसलिये उनको सावधानीपूर्वक इस देश की छूत से बचाना यह टोला जरूरी मानता है। साम्यवादी यह बात खुलकर कहते हैं और कांग्रेस इसे अपने व्यवहार से सिद्ध करती है। इस वैचारिक अवधारणा के आधार पर ये दोनों देश के मुसलमानों को अलग-थलग करके स्वयं को उनके रक्षक की भूमिका में उपस्थित करते हैं। जाहिर है इस भूमिका में रहने पर दम्भ भी आएगा। अत: ये दोनों दल मुसलमानों के तुष्टिकरण की ओर चल पड़ते हैं। चूंकि इस देश में लोकतांत्रिक प्रणाली है इसलिये मुसलमानों को यदि बहुसंख्यक भारतीयों में डराए रखा जाएगा जो जाहिर है कि वे अपने वोट भी एकमुश्त उन्हीं की झोली में डालेंगे। अब लोकतांत्रिक प्रणाली में ज्यों-ज्यों सत्ता के दावेदार बढ़ रहे हैं त्यों-त्यों मुसलमानों के रक्षक होने का दावा करने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। लालू यादव, मुलायम सिंह यादव और रामविलास पासवान का इस क्षेत्र में प्रवेश 'लेटर स्टेज' पर हुआ है परन्तु जो देर से आएगा वो यकीनन हो हल्ला ज्यादा मचाएगा। इसलिये मुसलमानों की रक्षा करने के लिये इन देर से आए रक्षकों के तेवर भी उतने ही तीखे हैं।

मुस्लिम समुदाय का ठोस वोट बैंक कांग्रेस की सबसे बड़ी शक्ति थी। लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जब मुस्लिम समुदाय से सीधे संवाद रचना प्रारम्भ कर दी तो कांग्रेस के नीचे से जमीन खिसकने लगी। इस पृष्ठभूमि में मुसलमान या इस्लामपंथी विवाद का मुद्दा बन जाता है। कांग्रेस एवं साम्यवादियों की दृष्टि में इस देश के मुसलमान एक अलग राष्ट्र है, इसलिये उनको सावधानीपूर्वक इस देश की छूत से बचाना यह टोला जरूरी मानता है। साम्यवादी यह बात खुलकर कहते हैं और कांग्रेस इसे अपने व्यवहार से सिद्ध करती है।

कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट जिन लोगों से मुसलमानों को डरा रहे थे उन्हीं लोगों ने मुसलमानों से बिना दलालों एवं एजेंटों की सहायता से सीधे-सीधे संवाद रचना शुरू कर दी। 1975 की आपात स्थिति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मुसलमानों के बीच जो संवाद रचना नेताओं के स्तर पर प्रारम्भ हुई थी उसे इक्कीसवीं शताब्दी के शुरू में संघ के एक प्रचारक इंद्रेश कुमार आम मुसलमान तक खींच ले गए। इन संवाद रचनाओं में इंद्रेश कुमार का एक वाक्य बहुत प्रसिद्ध हुआ कि हम 'सिजदा तो मक्का की ओर करेंगे लेकिन गर्दन कटेगी तो भारत के लिये कटेगी। देखते ही देखते इस संवाद की अंतर्लहरें देश भर में फैली और मुसलमानों की युवा पीढ़ी में एक नई सुगबुगाहट प्रारम्भ हो गई। जिस संघ के बारे में आज तक मुसलमानों को यह कहकर डराया जाता **(शेष पृष्ठ 29 पर)**

पुण्य स्मरण

एकात्म मानववाद के प्रणेता : पं. दीनदयाल जी

❑ डॉ. किशन कछवाहा

युगान्तकारी चिंतन से समाज में नवीन चेतना का संचार करने वाले भारतीय संस्कृति के पुरोधा महान देशभक्तों में एक थे– विलक्षण कृतित्व एवं व्यक्तित्व के धनी पं. दीनदयाल उपाध्याय, जिन्हें एकात्म मानववाद का जनक भी कहा जाता है। वे भारत की प्राचीन ऋषि परम्परा के मनीषी और दृष्टा थे। आज के संदर्भ में वर्तमान की समस्याओं का समाधान ढूंढना ही उनके चिंतन का मानों मुख्य केन्द्र बिन्दु था। राष्ट्रीय अखण्डता के लिये ही उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया एक अजेय योद्धा की भांति।

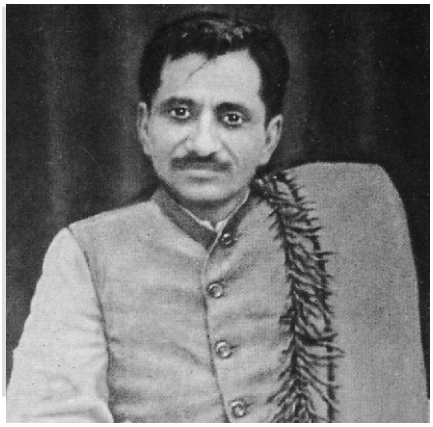

वे मानवता के पुजारी थे। उन्होंने कहा था– 'आज देश में ऐसे करोड़ों मानव हैं, जो मानव के किसी भी अधिकार का उपयोग नहीं कर पाते। ये मैले-कुचैले, अनपढ़, सीधे-सादे लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। जिस दिन इनके लिये पक्के सुन्दर घर बना देंगे, जिस दिन इनके बच्चों, स्त्रियों को शिक्षा और जीवन दर्शन का ज्ञान देंगे, जिस दिन हम इनके पैर की बिवाईयों को भरेंगे, जिस दिन इनको उद्योग-धंधों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊंचा उठा देंगे, उस दिन हमारा मातृभाव व्यक्त होगा।'

उनका दृढ़ विश्वास था कि भले ही अपना देश विविध समस्याओं से घिरा हुआ है लेकिन देश और समाज के जागरुक लोग निष्ठा और त्याग की भावना से प्रयास करें तो उत्तम समाज की रचना की जा सकती है। गरीब-अमीर सभी को इस महान कार्य में अपना योगदान देना होगा। वे गरीबों के मसीहा थे। उनकी सादगी और अहंकार शून्यता उनका एक विलक्षण गुण था जो आज के जन नेताओं में देखने को भी नहीं मिलता। कभी-कभी तो उनकी ग्रामीण वेष-भूषा को देखकर पहचानना भी मुश्किल हो जाता था।

सन् 37 में माननीय श्री भाऊराव देवरस की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रसार-प्रचार में लग गए और एक नई दिशा की ओर चल पड़े। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की। इनमें 'सम्राट चंद्र गुप्त' बड़ी प्रभावी पुस्तक है। राष्ट्रधर्म (हिन्दी) मासिक, दैनिक पत्र स्वदेश और पाञ्चजन्य साप्ताहिक के लिये भी अथक परिश्रम किया। इतना ही नहीं उनके मार्गदर्शन में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। पंडित जी का एक और विलक्षण ग्रन्थ 'एकात्म मानववाद' ने भी पाठकों को बड़ी संख्या में आकर्षित किया। अखण्ड भारत, हमारा कश्मीर राष्ट्र जीवन की समस्याएं, जनसंघ : सिद्धांत और नीति, जीवन का ध्येय, आद्य शंकराचार्य, राष्ट्रीय अनुभूति, इनको भी आजादी चाहिये, टैक्स या लूट आदि पुस्तकों की रचना की। समान नागरिक संहिता, राष्ट्रीय सुरक्षा और कश्मीर के सम्बंध में व्यक्त उनके विचारों से राष्ट्रीय स्तर पर एक वैचारिक आन्दोलन प्रारम्भ हो गया था। उनकी संगठन क्षमता से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने कहा था कि दीनदयाल उपाध्याय जैसे दो कार्यकर्ता मिल जाएं तो एक वर्ष में सारे देश का नक्शा बदल सकता हूं।

पंडित जी अखण्ड भारत के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने लंदन जाकर भारतीय मित्रों की मदद से 'लंदन जनसंघ फोरम' का भी गठन किया था। उन्होंने अपने अथक परिश्रम से भारतीय जनसंघ को गौरव प्रदान किया। जनसंघ के कारण हिन्दू विरोधी राजनीति को लगाम लगी। दीनदयाल जी ने सिद्ध कर दिया कि भारत की राजनीति में हिन्दू हितों की उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा तथा हिन्दू विचार ही सर्वांगीण पुनर्रचना का आधार बन सकता है।

महामानव की 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन के यार्ड में रहस्यमय ढंग से मृत्यु हो गई। सारा देश स्तब्ध था, शोकाकुल था। उनकी पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि। काश वह महान विभूति आज भी हमारे बीच होती जिसकी मानव मूल्यों में अगाध श्रद्धा थी। जो हमेशा समरसता पर आधारित समाज की सदैव कल्पना किया करते थे। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र के लिये समर्पित कर दिया। उनका व्यक्तित्व समस्त भारत का प्राणतत्व था। एकात्म मानववाद के तो वे अनोखे शिल्पी ही थे। ❑

संत रविदास

संत रविदास का जन्म संवत् 1471 वि.के आसपास अनुमानित किया जाता है। उस दिन माघी पूर्णिमा थी। वे बनारस के रहने वाले व महात्मा कबीर के समकालीन थे। रविदास बचपन से ही संत प्रकृति के थे। 12 वर्ष की अवस्था में ही वे श्री ठाकुर की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा किया करते थे। उन्हें किसी पाठशाला में औपचारिक शिक्षा कभी प्राप्त नहीं हुई। उन्होंने समूचा ज्ञान गुरु कृपा, सत्संग, पर्यटन, वातावरण और अन्तरज्ञान से प्राप्त किया। उनके गुरु स्वामी रामानन्द जी थे। संत रविदास के जीवन से प्रभावित होकर मीरा बाई ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया था। रैदास (रविदास) अलमस्त फक्कड़ थे। संत रविदास ने जनता में आत्मविश्वास जगाने और हिन्दू संस्कृति के मूल्यों के जागरण का प्रयास किया। उन्होंने बड़े साहस के साथ सामाजिक बुराइयों तथा असमानता का खुलकर विरोध किया। उनकी रचित वाणियां आज भी लोगों को सदमार्ग में प्रवृत्त होने की प्रेरणा प्रदान करती है। रैदास रामायण उनकी प्रसिद्ध कृति है। गुरु ग्रन्थ साहिब में भी उनकी लगभग 40 वाणियां संकलित हैं।

रामनाम की महिमा स्थापित करते हुए वे कहते हैं–

कहै रैदास सभे जगु लूटिया।
हम तऊ एक राम कहि छूटिया।। ❑

मातृवन्दना (मासिक) की ओर से आयोजित

निबंध लेखन प्रतियोगिता

निम्नलिखित विषय पर निबंध भेजें:

हिन्दुत्व निष्ठ शिक्षा के संवाहक – मदनमोहन मालवीय

- **प्रथम पुरस्कार : 3,100 रुपये**
- **द्वितीय पुरस्कार : 2,100 रुपये**
- **तृतीय पुरस्कार : 1500 रुपये,**
- **प्रोत्साहन पुरस्कार : पांच**

नियम :

- लेख 1400 से 1500 शब्दों के बीच होना चाहिये।
- लेख स्पष्ट और सुपाठ्य हो। यथासम्भव टंकित या संगणक पर मुद्रित कराकर भेजें और उसका एक बार पाठ अवश्य शुद्ध कर लें।
- पूर्ण परिचय, पता, दूरभाष क्रमांक आदि विवरण के साथ लेखक अपना लेख 28 फरवरी, 2011 तक उपलब्ध करा दें।
- लेख कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें।
- लेख की तीन प्रतियां भेजें।
- लेख भेजते समय पर्याप्त डाक टिकट लगाएं। बैरंग डाक तथा डाक विभाग की किसी भूल के कारण विलम्ब से प्राप्त लेख स्वीकार नहीं होंगे।
- लेख–प्राप्ति सूचना के लिये एक पता लिखा पोस्टकार्ड तथा निर्णय की जानकारी हेतु पांच रुपये के डाक टिकट लगा लिफाफा भी संलग्न करें।
- पुरस्कार हेतु प्रेषित लेख 'मातृवन्दना' की सम्पत्ति होगी, वे वापिस नहीं किये जाएंगे। प्रकाशन का अधिकार मातृवन्दना के पास रहेगा।
- सम्मान हेतु चयनित लेखकों को सार्वजनिक कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। इसकी सूचना उन्हें पर्याप्त समय पूर्व दी जाएगी।
- निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम होगा।

निबंध भेजने का पता

संयोजक, निबंध प्रतियोगिता
मातृवन्दना, शर्मा भवन, नया शिमला–171009
e-mail : matrivandanashimla@gmail.com

सैक्युलरवादियों के दोगलेपन का ताजा शिकार- भारत की न्यायपालिका

❑ डॉ. सुरेंद्र जैन

माओवादियों के मददगार विनायकसेन व दो अन्य को राजद्रोह के अपराध में आजीवन कारावास की सजा घोषित होते ही ऐसा लगा मानो भारत के सैक्युलर जगत में भूकम्प आ गया। इनकी सारी बिरादरी एक स्वर में न्यायपालिका के पीछे हाथ धोकर पड़ गई। इनके लिये भारतीय संविधान से लेकर भारत के न्यायाधीशों तक, सभी 'गरीब विरोधी' और 'अंधे' बन गए। इनके अनुसार विनायक सेन को बिना किसी सबूत के आधार पर सजा सुनाई गई तथा गरीबों की आवाज उठाने के कारण ही सजा सुनाई गई है। निर्णय को पढ़े बिना ही वे स्वयं ही आरोपों की कल्पना कर रहे हैं और उनकी मनमानी व्याख्या कर रहे हैं। उन्होंने यह भी तथ्य सामने नहीं आने दिया कि इनकी जमानत की अर्जी मा. सर्वोच्च न्यायालय दो बार ठुकरा चुका है। क्या सैशन कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक सभी बिना सबूतों के आधार पर निर्णय देते रहे?दुर्भाग्य से भारत के एक पूर्व न्यायाधीश श्री राजेंद्र सच्चर भी इस दौड़ में शामिल हो गए। वैसे इनके लिये यह स्वाभाविक ही था क्योंकि जब भी अलगाववादियों का मामला आता है ये हमेशा उनके साथ खड़े हुए दिखाई देते हैं। चाहे माओवादी हों या जेहादी आतंकवादी यह सारा 'सैक्युलर गैंग' इनके साथ खड़ा होता है। भारत विरोध के बने घोषित एजेंडे की पूर्ति में जो भी बाधा बनता है, ये सभी इसी प्रकार उसके पीछे पड़ जाते हैं। पत्रकार जगत के भी कुछ स्वनामधन्य पत्रकार हमेशा की तरह अपने संसाधनों के साथ सामने आ जाते हैं। इस बार तो एक चैनल इस विषय पर आग उगलने वाले हर व्यक्ति को लगातार प्रमुखता से दिखा रहा है मानो अब देश से भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, अलगाववाद आदि सभी समस्याएं समाप्त हो गई हों और विनायक सेन के छूटने से देश में रामराज्य आ जाएगा। ऐसा लगता है कि इन सब लोगों का न्यायपालिका पर कोई विश्वास नहीं रहा। अभी उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में याचिका के विकल्प बचे हैं। शायद ये न्यायपालिका को प्रभावित करने की रणनीति के अंतर्गत इस प्रकार के आक्रामक रुख का प्रयोग कर रहे हैं।

चाहे माओवादी हों या जेहादी आतंकवादी यह सारा 'सैक्युलर गैंग' इनके साथ खड़ा होता है। भारत विरोध के बने घोषित एजेंडे की पूर्ति में जो भी बाधा बनता है, ये सभी इसी प्रकार उसके पीछे पड़ जाते हैं। पत्रकार जगत के भी कुछ स्वनामधन्य पत्रकार हमेशा की तरह अपने संसाधनों के साथ सामने आ जाते हैं।

इन सैक्युलर तालिबानियों के निशाने पर न्यायपालिका पहली बार नहीं आई है। संसद पर हमला करने के आरोप में अफजल गुरू को फांसी की सजा हो या अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक दर्जा देने का मामला हो या आंध्र सरकार द्वारा मुस्लिम समाज को असंवैधानिक तरीके से आरक्षण देने का मामला हो या गुजरात दंगों के मामले में नरेंद्र मोदी को क्लीन चिट देने का मामला हो, जब भी इनके एजेंडे के अनुसार निर्णय नहीं आए, ये इसी प्रकार न्यायपालिका पर आक्रमण करते रहे हैं। ऐसे और भी पचासियों उदाहरण हैं जब ये लोग न्यायपालिका को इसी प्रकार अपमानित करते हुए सब प्रकार की सीमाएं पार कर आक्रमण करते हैं।

ये वही लोग हैं जो रामजन्मभूमि के विषय में हिन्दू संगठनों पर न्यायपालिका के निर्णय को मानने के लिये हमेशा आक्रमण करने की कोशिश करते थे। परन्तु निर्णय आने के बाद ये इसी प्रकार से मा. न्यायपालिका पर अभद्र हमला करने लगे थे। 30 सितम्बर, 2010 को सायं 4 बजे तक न्यायपालिका की दुहाई देने वाले ये सभी सेक्युलर तालिबानी निर्णय आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगे और बहुत ही भद्दे तरीके से निर्णय की धज्जी उधेड़ने लगे। मा. न्यायाधीशों पर व्यक्तिगत हमला करने में भी इन्होंने संकोच नहीं किया। दुर्भाग्य से ये सभी लोग मीडिया के एक वर्ग द्वारा भद्र लोक के व्यक्ति के रूप में दिखाए जाते हैं। इनके विपरीत हिन्दू संगठनों के प्रतिनिधियों ने कभी न्यायपालिका के प्रति असम्मान प्रकट नहीं किया।

इन लोगों को यह समझ लेना चाहिये कि देश की जनता सब समझ रही है। इसलिए जनता हमेशा हमारे साथ रहती है और सब प्रकार के प्रचार के बावजूद ये लोग आम समाज से कटे रहते हैं। इन लोगों को वास्तविकता को स्वीकार करनी चाहिये और अपने तालिबानी तरीकों से बाज आना चाहिये अन्यथा उन्हें अप्रसांगिक बनने में देर नहीं लगेगी।❑ (नवोत्थान लेखा सेवा)

चीन ने फिर की हिमाकत

गुलाम कश्मीर में रेवले लाईन बिछा रही चीनी सेना ने एक बार फिर अपने भारत विरोधी एजेंडे को दिखाते हुए लेह में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एएलसी) का उल्लंघन कर भारतीय सीमा के भीतर गोंबीर गांव में एक यात्री शेड के निर्माण कार्य को रुकवा दिया। यही नहीं चीनी सैनिकों ने काम कर रहे श्रमिकों व उनके ठेकेदार को जान से मारने की धमकी भी दी थी। अलबत्ता, भारतीय सेना ने चीनी सैनिकों से अपने श्रमिकों की सुरक्षा करने और चीनियों की इस हिमाकत का विरोध करने के बजाए लेह जिला प्रशासन को लिख भेजा कि वह एएलसी के 50 किलोमीटर के दायरे में किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य से पहले रक्षा मंत्रलय की अनुमति ले। यह घटना कोई नई नहीं बल्कि चार माह पुरानी है।

यह घटना लद्दाख प्रांत के दक्षिण पश्चिमी इलाके में स्थित दमचुक क्षेत्र के गोंबीर गांव के बाहरी छोर पर सितम्बर 2010 के अंत में हुई थी। यह इलाका लेह जिला मुख्यालय से करीब 300 किलोमीटर की दूरी पर है। सम्बंधित अधिकारियों ने बताया कि इस घटना की सूचना मिलने पर नागरिक प्रशासन, सेना, भारत तिब्बत सीमा पुलिस और विभिन्न खुफिया एजेंसियों ने मौके पर जाकर हालात का जायजा लेने के बाद एक रिपोर्ट तैयार कर केन्द्रीय गृह मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय को भेजी है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि सीमांत क्षेत्र विकास परियोजना (बीएडीपी) के तहत दो लाख रुपये की लागत का एक यात्री शेड दमचुक क्षेत्र के गोंबीर गांव में टी-जंक्शन पर बनाया जा रहा था।

निर्माण स्थल पर पब्लिक लिबरेशन आर्मी (पीएलए-चीनी सेना) के जवान अचानक आ पहुंचे। इनमें से कुछ मोटर साइकिल पर सवार थे। इन लोगों ने निर्माण कार्य को रुकवाते हुए सम्बंधित ठेकेदार व मजदूरों को वहां से भगा दिया। चीनी सैनिकों ने श्रमिकों को गम्भीर परिणामों की धमकी दी थी। ठेकेदार ने इस घटना की तत्काल सूचना निकटवर्ती सैन्य शिविर में देते हुए सम्बंधित प्रशासन को भी सूचित किया था। चीनी सैनिकों ने वहां नारेबाजी भी की थी।

उन्होंने बताया कि 2 अक्तूबर, 2010 को जिला प्रशासन ने एक टीम को गोंबीर गांव में भेजा था। इसके अगले ही दिन एएलसी की सुरक्षा के लिये जिम्मेदार सेना की 3 इंफैंटरी डिवीजन ने राज्य सरकार को एक पत्र के जरिये सूचित किया कि एएलसी पर यथास्थित बनाई रखी जाए और इसके 50 किलोमीटर के दायरे में किसी भी प्रकार के निर्माण से पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्रालय की मंजूरी जरूर ली जाए। श्रीनगर स्थित रक्षा मंत्रलय के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल जेएस बरार ने इस संदर्भ में किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया से इनकार किया है।❑

(शेष पृष्ठ 25 पर)

रहा कि उनको सबसे ज्यादा खतरा संघ से है उस संघ को लेकर मुसलमानों का भ्रम छंटने लगा। यह स्पष्ट होने लगा कि संघ मुसलमानों के खिलाफ नहीं है। संघ को लेकर मुसलमानों के भीतर कोहरा छंटने की प्रारम्भिक प्रक्रिया शुरू हो गई है और इसी भीतरी डर के कारण सोनिया ब्रिगेड संघ पर निशाना साध रही है। सोनिया ब्रिगेड को इसका एक और लाभ भी हो सकता है, जब सारे देश का ध्यान संघ पर हो रहे प्रहारों पर लगा होगा तो चर्च चुपचाप अपने षड्यंत्रों को सफलतापूर्वक चला सकता है।'❑ (नवोत्थान लेखा सेवा, हिन्दुस्थान समाचार)

वर्ष प्रतिपदा पर सामाजिक समरसता विशेषांक

वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर मातृवन्दना का *'सामाजिक समरसता'* विषय पर विशेषांक प्रकाशित किया जाएगा। पाठकों से अनुरोध है कि आपके क्षेत्र में चल रहे सामाजिक समरसता के कार्य व प्रयासों को लिखकर हमें भेजें। – सम्पादक

With Best Compliments from

HYUNDAI

Shivansh Hyundai

(Shivansh Motors Pvt. Ltd.)

NH-21, Gutkar, Mandi
(H.P.)- 175021

Tel.: 01905-221060, 221151
Fax: 01905-221160

E-mail: md@shivanshyundai.com

ग्वारपाठा की खेती में है मुनाफा

जंगलों में पाया जाने वाला ग्वारपाठा अपने औषधीय गुणों के कारण अब खेतों में उगाया जाने लगा है। पाचन तंत्र, लीवर की कमजोरी, चर्म रोग, जलने एवं झुलसने के अलावा अनेक सौन्दर्य प्रसाधनों में ग्वारपाठा यानी एलोविरा का उपयोग हो रहा है। ग्वारपाठा की खेती के लिये हल्की से मध्यम किस्म की दोमट, बलुई दोमट तथा कछारी मिट्टी वाले खेत अधिक उपयुक्त रहते हैं। जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को समतल करें और इसी समय गोबर की पकी खाद बिखेर दें। कम्पोस्ट खाद भी उचित दूरी पर घूरे बनाकर फैला सकते हैं। इसके बाद दतारी चलाकर खाद को अच्छी तरह मिट्टी में मिलाना चाहिए। डेढ़ से दो फुट की दूरी पर नौ से बारह इंच ऊंची मेढ़ व नालियां बनाकर पौधे लगाएं। पौधे से पौधे की दूरी एक फुट रख सकते हैं। एक एकड़ में 20-22 हजार पौधे लगा सकते हैं। अधिक उपजाऊ मिट्टी हो तो लाईनों की दूरी दो फुट तथा पौधों के बीच डेढ़ फुट दूरी रखी जा सकती है। इस तरह प्रति एकड़ पर लगभग 15 हजार पौधों की जरूरत होगी।

जंगलों में पाया जाने वाला ग्वारपाठा अपने औषधीय गुणों के कारण अब खेतों में उगाया जाने लगा है। पाचन तंत्र, लीवर की कमजोरी, चर्म रोग, जलने एवं झुलसने के अलावा अनेक सौन्दर्य प्रसाधनों में ग्वारपाठा यानी एलोविरा का उपयोग हो रहा है।

पौधे लगाने के बाद हल्की सिंचाई करें। 20-25 दिन बाद 25 किलोग्राम यूरिया, 50 किग्रा सुपर फास्फेट व 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाकर नालियों में डालने के बाद गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई कर दें। खरपतवार नियंत्रण के लिये नियमित निराई तथा गुड़ाई जरूरी है। समय-समय पर पौधों पर मिट्टी चढ़ाते रहें। एलोविरा में बहुत सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती, लेकिन पर्याप्त नमी जरूरी है। बरसात में खेत से पानी निकालने में कोताही कतई नहीं करें। पानी के लगातार सम्पर्क में रहने से पौधे पर काला चिकना पदार्थ एकत्रित हो जाता है, जिससे पौधे गलने लगते हैं। मौसम यदि शुष्क हो तो बढ़वार अच्छी होती है। पूरी तरह से ग्वारपाठा तैयार होने में 8 से 12 महीने तक लग सकते हैं। पौधे विकसित हो जाएं तो पत्तियों को काटकर अलग कर लिया जाता है। इस तरह नए कल्ले फूटने लगते हैं। पत्तियां निकलते वक्त 40 किलो नत्रजन, 30 किलो सुपर तथा 20 किलो पोटाश प्रति एकड़ की दर से नालियों की मिट्टी में मिलाकर सिंचाई कर दें। एक बार यदि ग्वारपेठा लग जाए तो उससे तीन से पांच साल तक उपज ली जा सकती है। जरूरत के हिसाब से पके लसीले गूदे या फिर सूखे हुए ग्वारपाठे को रख सकते हैं। आजकल कई ऐसे यंत्र हैं, जिससे ग्वारपाठे का प्रसंस्करण आसानी से हो सकता है। इससे निकले गूदे से आयुर्वेदिक द्रव्य, क्रीम, पेस्ट या फिर चूर्ण इत्यादि बनाया जाता है। जानकारों के मुताबिक प्रति एकड़ पर लगे 20 हजार पौधों से 6-7 हजार किग्रा गूदा मिल सकता है। इसके उत्पादों से मोटी कीमत मिलती है। लेकिन व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार की जानकारी जरूर हासिल कर लें। ❑

पत्र लेखकों को सम्मानित किया जाएगा

विश्व संवाद केन्द्र शिमला ऐसे पत्र लेखकों को सम्मानित करेगा जो सम्पादक के नाम पत्र लिखकर जागरूक नागरिक की भूमिका निभा रहे हैं। विश्व संवाद केन्द्र के प्रमुख ने बताया कि मीडिया में न रहते हुए भी एक सचेत नागरिक की भूमिका निभाने वाले पाठक संपादक के नाम पत्र लिख कर सामाजिक समस्याओं को उजागर करते हैं। उनकी यह भूमिका सराहनीय रहती है। ऐसे पाठक जो अपने आसपास की समस्याओं एवं किसी ज्वलंत मुद्दों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं उन्हें विश्व संवाद केन्द्र सम्मानित करेगा।

हिमाचल प्रदेश में आने वाले अंग्रेजी व हिन्दी समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में नवम्बर, 2010 से जनवरी, 2011 के बीच छपे 'संपादक के नाम पत्रों' की प्रतियां अपने पूर्ण पते के साथ मातृवन्दना कार्यालय, शर्मा भवन, नया शिमला-171009 को भेजें ताकि उनकी भूमिका को सराहा जा सके। सर्वश्रेष्ठ रहने वाले 'संपादक के नाम पत्र' के लेखकों को सम्मानित किया जाएगा। ऐसे पाठक जो समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में 'संपादक के नाम पत्र' लिखते हैं उनकी प्रतियां 28 फरवरी, 2011 तक मातृवन्दना कार्यालय पहुंच जानी चाहिए। प्रकाशित हुए पत्रों की तारीख व समाचार पत्र का नाम पत्र के नीचे अवश्य लिखें। अप्रकाशित पत्रों को इस प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा। ❑

इन्सान अपने धर्म को पहचान

❑ कबीरुद्दीन फारान

(गतांक से आगे)

वास्तव में धर्म की आड़ में हम जिस शर्मनाक तरीके से धर्म को बदनाम कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि मनुष्य के अन्दर वह दर्दमंदी नहीं रही जो इन्सानियत के लिये तड़प सके, पहलू में वह दिल न रहा जो कभी किसी के दर्द में कराह सके, वह आंखें न रही जो दुख में कुछ कण आंसुओं के टपका सके। इन्सान का हाथ नहीं भेड़िये का पंजा है जो लोगों की गर्दनों पर पड़ता है यह इंसान के रूप में राक्षस है जिनके सामने इंसान की हकीकत इंसान की तारीख मां-बाप की ममता और प्यार नहीं, वह यह नहीं जानते कि इंसान के बिगाड़ पर खुदा का कितना कहर और नाराजगी है।

इसलिये आवश्यक है कि मनुष्य अपने धार्मिक नियमों को समझे और उन्हें व्यवहार में लाए क्योंकि जो आदमी अपने धर्म के गुणों को समझेगा वह देश का वफादार होगा। वह एक सम्पूर्ण मानव और श्रेष्ठ नागिरक होगा।

अगर हमने इंसानियत को अपनाकर समय की विनाशकारी धारा को मोड़ने की कोशिश नहीं की। एक-दूसरे को उल्फत, प्यार और मुहब्बत का सबक नहीं दिया। साम्प्रदायिकता, जुल्म व फसाद का तरीका अपनाए रखा। इंसानियत इसी तरह कुचली जाती रही, बिना खिले फूलों को इसी तरह मसला जाता रहा, तब वह दिन दूर नहीं जब हम अत्यधिक भयानक आग की ओर बढ़ जाएंगे और कोई हमारी खबर लेने वाला नहीं होगा।

जहन-ए इन्सां की हदें गर इस तरह गिरती गईं!
तो जमीं पर सरहदें ही सरहदें रह जाएंगी!!

इसलिए इस वक्त का सबसे बड़ा काम यह है कि अपने-अपने मजहब के दायरे में इंसानियत का एहतराम पैदा करने, इंसानियत और इंसाफ को ज़िन्दा करने, मुल्क में अमन और शांति की फिजा कायम करने, इंसान दोस्ती और प्रेम भाव को बढ़ावा देने के लिये तन-मन-धन से कोशिश करे।

हाईल हों मुहब्बत में नफरत की जो दीवारें
एहसास-ए-मोहब्बत के फूलों से सजा डालो।
इंसाँ की मुहब्बत के खुद नक्श उभर आएं
तहजीब व तमद्दुन की एक ऐसी बिना डालो।

फसादात में तबाह ख्वाह कोई तबका हो, घर चाहे किसी का जले सामान किसी का लुटे और खून किसी का बहे नुकसान इंसानियत का है, हमारे मुल्क और हमारे समाज का है और खुदा की प्यारी मुखलूक का है। ❑

शिक्षा का माध्यम स्वभाषा

गत दिनों 'भारतीय भाषा' विषय पर दिल्ली के मालवीय स्मृति भवन में राष्ट्रीय स्तर की एक संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में देश के 10 राज्यों के 25 संस्थाओं के 115 विद्वानों ने सहभागिता की। प्रतिभागियों में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं पर कार्य करने वाली संस्थाओं के पदाधिकारी, अधिवक्ता, पत्रकार, लेखक, साहित्यकार एवं शैक्षिक संस्थाओं के प्रबंधक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

इस गोष्ठी में विभिन्न विद्वानों द्वारा चिंतन-मनन के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया -

अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा ने करोड़ों बच्चों को दिमागी तौर पर अपाहिज बना दिया है। दो प्रतिशत अंग्रेजी प्रेमियों ने देश की सारी सुविधाओं पर कब्जा जमा रखा है। करोड़ों गरीब, ग्रामीण, वनवासी एवं पिछड़े लोगों की दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा है। उन्नति के सारे अवसरों से आज करोड़ों बच्चे उपेक्षित तथा वंचित हैं। अंग्रेजी के जरिये इस देश में एक नई प्रकार की जाति प्रथा जन्म ले रही है। देश दो वर्गों में बंटा है- एक इण्डिया तथा दूसरा है भारत। मैकॉले का इण्डिया अधिकतर उच्च पदस्थ, अमीर तथा उच्च भावना से ग्रस्त है। वे ऋषियों मनीषियों के भारत के प्रति हीनभावना से ग्रस्त हैं। उन्होंने आम जनता के विरुद्ध आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और देश की धरती से समाज को सम्बंध विच्छेद करने का एक षड्यंत्र रचा है। हमारी यह स्पष्ट धारणा है कि अंग्रेजी के वर्चव को समाप्त किये बिना देश से गरीबी तथा असमानता को दूर नहीं किया जा सकता। भारतीय भाषा प्रेमी देश भक्तों को आवाहन है कि भारत की भारतीयता को वैभव का स्थान दिलाने के लिये कटिबद्ध होकर संघर्ष करें और संकल्प करें कि भारतीय भाषाओं का प्रयोग अपने जीवन में करें। एवं इस हेतु राष्ट्रव्यापी जन-जागरण अभियान चलाएंगे। क्योंकि भाषा का प्रश्न केवल भाषाओं का ही नहीं है बल्कि हमारी अस्मिता का भी प्रश्न है, इसी से हमारी संस्कृति और परम्पराओं की नींव को मजबूत किया जा सकता है। अंग्रेजी का वर्चस्व तब ही समाप्त किया जा सकता है जब शिक्षा का माध्यम स्वभाषा हो। ❑

कम्बोडिया, लाओस और भारत

❑ कैलाश ठुकराल

भारत राष्ट्रमंडल जैसे महत्त्वहीन व गुलामी के प्रतीक संगठन का तो सदस्य है परन्तु अपने समान संस्कृति वाले देशों के साथ संगठन बनाने की तरफ नहीं सोच रहा जो अन्य संगठनों से अधिक प्रभावशाली साबित हो सकता है। इन्हीं श्रेणी के दो राष्ट्र है कम्बोडिया और लाओस जहां राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह की यात्रा के बाद हिन्दू-बौद्ध देशों के संगठन के गठन की चर्चा तेज हो गई है।

लाओस के निवासी अपने देश को भगवान राम के पुत्र लव से जोड़ते हैं जो लव देश से लाओस कहलाया। थाईलैंड में भी भगवान श्रीराम के पुत्र लव के नाम से एक नगर लवपुरी है। एक और बड़े नगर का नाम अयोध्या है जो पहले थाईलैंड की राजधानी हुआ करता था। कम्बोडिया भी 'कम्बुज' का अंग्रेजी उच्चारण है। दोनों देशों में रामायण की समृद्ध परम्परा है। कम्बोडिया की रामायण मंडली तो भारत में आकर रामायण का अभिनय भी कर चुकी है। कम्बोडिया के नरेश नरोत्तम सिंहानुक जब यूरोप के दौरे पर जाया करते थे तो कम्बोडिया की गौरवमयी संस्कृति का प्रदर्शन करने के लिये रामायण की मंडली साथ ले जाया करते थे। उनके पुत्री पुष्पा सीता जी का अभिनय करती थीं। दो दशक पूर्व वहां 'खमेर रूज' नामक कम्युनिस्टों के साथ हुए गृहयुद्ध में बहुत कुछ नष्ट हुआ किन्तु फिर भी कम्बोडिया में अंकोरवाट के नाम से प्रसिद्ध संसार का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर सुरक्षित बना रहा। अंकोरवाट की दीवारों पर सम्पूर्ण रामायण के चित्र बने हुए हैं।

कम्बोडिया और लाओस की भाषाओं में संस्कृत शब्दावली प्रचुर मात्रा में है। वैज्ञानिक तथा अन्य पारिभाषिक शब्द संस्कृत के ही हैं। वहां की भाषाओं की लिपियां भी भारत की प्राचीन ब्राह्मी लिपि से ही विकसित हुई है। विद्वानों ने ही अंकोरवाट के विराट मंदिर को खोजा और कम्बोडिया में संस्कृत भाषा के नौ हजार शिलालेखों को इकट्ठा कर पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। लाओस में भी संस्कृत भाषा के शिलालेख मिलते हैं। लाओस एक अत्यधिकधनहीन देश होते हुए भी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को बनाए रखे हुए हैं। दोनों देशों में भारत का 'शक संवत्' प्रचलित है, महीनों के नाम भी चैत्र, बैसाख, आषाढ़ आदि भारत के समान ही हैं। कम्बुज देश में 800 वर्षों तक संस्कृत ही राजभाषा रही। किन्तु दोनों देशों में बाद में संस्कृत का स्थान पाली ने ले लिया। दोनों देशों में 6-7 सौ वर्षों से थेरवादी बौद्धमत का प्राबल्य है। लाओस के साथ लगते हुए देश वियतनाम के दक्षिण पूर्वी भाग में चम्पा नाम का हिन्दू राज्य तो तीसरी शताब्दी में ही स्थापित हो चुका था। एशिया के समान-संस्कृति वाले देश तो भारत के साथ मिलकर हिन्दू-बौद्ध राष्ट्रकुल बनाना अधिक पसंद करेंगे। कोई प्रयास तो करे। ❑

अमृतसर की निक्की, अमेरिका में गवर्नर

अमेरिका के साउथ कैरोलिना प्रांत के गवर्नर पद पर कब्जा जमाकर रिपब्लिकन पार्टी की भारतीय-अमेरिकी उम्मीदवार निक्की हैली ने अमेरिकी राजनीति में इतिहास रच दिया है। वह दूसरी ऐसी भारतीय अमेरिकी नागरिक बन गई है जिसने किसी अमेरिकी राज्य के मुखिया पद पर कब्जा जमाया है। अमृतसर से गए सिख माता-पिता की संतान निक्की लुइसियाना के बॉबी जिंदल के बाद गवर्नर बनने वाली दूसरी भारतीय-अमेरिकी हैं, वहीं वह भारतीय मूल की पहली महिला गवर्नर भी हैं। ❑

फ्रांस में इस्लामिक बैंक पर रोक लगी

फ्रांस सरकार ने इस्लामिक बैंक पर रोक लगा दी है। फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी ने इस्लामिक बैंक के कारण वहां बढ़ रहे इस्लामीकरण को देखते हुए यह प्रतिबंध लगाया है। इसी कारण जर्मनी सहित यूरोप के अन्य क्षेत्रों में भी इस्लामिक बैंकों के विरुद्ध वहां के जागरूक नागरिकों द्वारा अभियान चलाया जा रहा है।

इस्लामिक बैंक शरीयत के अनुसार काम करता है और यह बैंक कहीं भी जमीन, जायदाद खरीद कर अपने पास रख सकता है और अपने लोगों (मुसलमानों) को बेच सकता है। इसी कारण यूरोप के कई देशों में इस्लामीकरण बढ़ा क्योंकि इन बैंकों ने वहां जाकर बसने वाले मुसलमानों को मकान, दुकानें और जमीन बेची। वोट बैंक की राजनीति के कारण भारत में भी इस्लामिक बैंक खोलने के प्रयास किए जा रहे हैं। हालांकि केरल उच्च न्यायालय ने भारत में इस्लामिक बैंक खोलने पर रोक लगा रखी है। देश के प्रमुख अर्थशास्त्री डॉ. राकेश रंजन ने चेतावनी दी कि इस्लामिक बैंकों के विरुद्ध यूरोप जैसा अभियान भारत में भी चलना चाहिये नहीं तो यहां की सेकुलर सरकार इस्लामिक बैंक के लिये संविधान में भी संशोधन कर सकती है।❑

ऐसी हिम्मत वाली मनु थी

ज्येष्ठ का मास (गंगा दशहरा का पर्व) काशी के घाटों पर नर-नारियों की अपार भीड़। पेशवा बाजीराव द्वितीय के अनुज और उनके गृह-प्रबंधक मोरोपंत तांबे मोरपंखी नौका पर सवार होकर दशहरे की बहार लूट रहे थे। मोरोपंत की 6-7 वर्ष की चपल-चंचल कन्या नाव की दूसरी मंजिल पर बैठी तैरते हुए लड़कों को देख रही थी।

सहसा शोर मचा- 'मगर, मगर।' और सचमुच 12 वर्ष के लड़के की बगल में एक मगर उसी घाट के पास उभर आया। सभी तैराक छिटक-छिटक कर दूर जाने लगे किन्तु वह बालक अपनी बगल में मगर को देखकर सन्न रह गया। उसके हाथ-पैर अवश हो गए और बालक डूबने लगा।

हजारों आदमियों ने यह दृश्य देखा। बड़े-बड़े वीर बांकुरों ने देखा, कुशल तैराकों ने दखो, पेशवा के अनुज और अनेक नौकरों-चाकरों ने देखा। किन्तु बालकको बचाने के लिये उसके पास जाने का साहस किसी को नहीं हुआ। साहस किया उस 6-7 वर्ष की बालिका मनु ने। काछा तो उसने कस ही रखा था, मोरपंखी की दूसरी मंजिल से झम्म करके गंगा में गूद गयी। लोग हां-हां करते रह गए किन्तु वह अपने नन्हें हाथ फेंकती उस बालक के पास पहुंच गई और उसे सहारा दिया। बालक ने भी हिम्मत बांधी और दोनों देखते-देखते तैर कर किनारे लगे। मोरोपंत ने नौका से कूदकर अपनी बेटी को गोद में उठा लिया।

यह साहसी मनु आगे बनी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई।❑

पिछले अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. इंग्लैंड में, 2. मगधी 3.नारमन प्रिचार्ड, 4. कपिल वस्तु में, 5. बिन्दुसार के, 6. चंदेल, 7. फखरुद्दीन अली अहमद, 8. दादा भाई नौरोजी 9. अल्बर्ट नामक बंदर, 10. रामबोला

पहेलियां : 1. शेर, 2. रेलगाड़ी, 3. जुगनू, 4. दाता

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. ह्यून सांग ने, 2. गोदावरी के, 3. दक्षिण गंगोत्री, 4. गोविन्द सागर झील, 5. जिला कुल्लू में, 6. 1853, 7. रक्त वाहिनियां, 8. गुजरात की, 9. ओरांगुटान के, 10. डॉ. ऐनी बेसेंट।

पहेलियां : 1. घड़ी, 2. दर्पण, 3. रुपया, 4. केला

तीन बातें

- **तीन को प्रणाम करो :** माता, पिता, गुरु
- **तीन के लिये लड़ो :** आजादी, ईमानदारी, इंसाफ
- **तीन से अच्छा सलूक करो :** गरीब, नौकर, बुजुर्ग
- **तीन पर कब्जा करो :** जुबान, आदत, गुस्सा
- **तीन के लिये मर मिटो :** धर्म, देश, दोस्त
- **तीन से मखौल मत करो :** अंगहीन, विधवा, अनाथ
- **तीन बातें मत भूलो :** तीर कमान से वाण, बुरा वचन जुबान से, प्राण तन से।

- **मोहित व रोहित महाजन**, डलहौजी

हंसते-हंसते

☺ मरीज, 'मुझे बीमारी है कि खाने के बाद भूख नहीं लगती। सोने के बाद नींद नहीं आती। काम करूं तो थक जाता हूं।'
डॉक्टर, 'सारी रात धूप में बैठो ठीक हो जाओगे।'

☺ संता (बंता से), 'यह दो हजार का चैक किसे भेज रहे हो?'
बंता (संता से), 'अपने छोटे भाई को।'
संता, 'लेकिन चैक पर तुमने हस्ताक्षर तो किये ही नहीं।'
बंता, 'मैं अपना नाम गुप्त रखना चाहता हूं।'

☺ मालिक आलसी नौकर से, 'ये इतने सारे मच्छर गुन-गुन कर रहे हं। मैंने तुझसे कितनी देर पहले कहा था, मारे क्यों नहीं।'
नौकर, 'साहब मच्छर तो मार दिये, ये तो उनकी विधवाएं हैं जो रो रही हैं।'

☺ सूरज (चन्द्र से), 'आज काम से लौटते समय किसी ने बस में मेरी जेब से मेरा पर्स निकाल लिया।'
चन्द्र, 'जब उसने तुम्हारी जेब में हाथ डाला तो क्या तुम्हें पता नहीं लगा?'
सूरज, 'पता तो लगा था लेकिन मैंने सोचा कि शायद यह मेरा अपना ही हाथ होगा।'

बाधाएं जिसे झुका न सकीं

'बाबा, गांव के सब बच्चे पढ़ने जाते हैं। मुझे भी किताब दे दो, मैं भी पढ़ने जाऊंगा।'

पुत्र की बात को सुनकर निर्धन-असहाय पिता का हृदय अपनी विवशताओं और पुत्र की महत्वाकांक्षाओं के द्वन्द्वसे कराह उठा। जिस परिवार को कठोर परिश्रम के बाद भी दोनों समय पेट भर भोजन ने मिल पाता हो उसक लिये शिक्षा का प्रबंध एक विकट प्रश्न था।

एक क्षण सोचने के बाद किसान ने प्यार से बालक को गोद में उठा लिया और हंसते हुए निश्चात्मक स्वर में कहा- 'बेटा मैं तुम्हें अवश्य पढ़ाऊंगा। तुम कल से ालिय जाना।' गांव की प्राथमिक शिक्षा पूरी होते ही बालक ने आगे पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। पिता ने अपनी स्थिति का विचार न करते हुए आगे की पढ़ाई के लिये दूर नगर में ले जाना स्वीकार किया। पिता-पुत्र नगर की ओर चले।

सड़क के किनारे लगे मील के पत्थर को देखकर बालक ने आश्चर्य से पूछा- 'बाबा, यह क्या है?' किसान ने कहा- 'बेटा, यह मील का पत्थर है।' एक लम्बी यात्रा तय करने के बाद भूखा-प्यासा थका किसान विश्राम के लिये एक छायादार वृक्ष के नीचे लेट गया और उसे लेटते ही नींद आ गई। किन्तु ज्ञान पिपासु बालक को नींद कहां?

बालक ने अपने फटे थैले से टूटी स्लेट निकाली और मील के पत्थरों पर देखे हुए निशानों को स्लेट पर क्रम से अंकित करने लगा। नींद खुलने पर किसान ने देखा किबालक ने स्लेट पर क्रम से एक से सौ तक के अंग्रेजी के अंक शुद्ध और क्रमबद्ध लिखे हैं।

कालांतर में यही बालक अपने उत्साह, लगन एवं परिश्रम से अनेकों कष्टों के बीच नगर के चौराहों पर जलने वाले क्षीण प्रकाश में भी ज्ञान अर्जन करता रहा। किसी के लिये साधारण मजदूर सा काम करने में भी नहीं झिझका और अन्त में बना विद्या का सागर- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।❑

1. **खाती पीती नहीं कभी कुछ**
हरदम चलती जाए।
पल-पल बड़ा कीमती
सबको यही समझाए

2. **जैसे को तैसा बताए**
नहीं तनिक भी वह छिपाए
यदि गिर जाए जमीन पर
चूर-चूर हो जाए।

3. **पहले सोलह से बनता था**
अब बनता है सौ से।
चल रहा है व्यवसाय यहां पर
पहले कई वर्षों से।

4. **पत्ते में है बंद,**
स्वादिष्ट कलाकंद
बाजार हो या मेला
खाया जाता अकेला।

प्रश्नोत्तरी

नीचे 10 प्रश्न दिये गए हैं। अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा कीजिये और देखिये कि आप कितने प्रश्नों के उत्तर जानते हैं। सही उत्तर इसी अंक में देखिये-

1. **हर्षवर्धन के शासनकाल में किस चीनी यात्री ने भारत भ्रमण किया था?**
2. **नासिक में कुम्भ मेला किस नदी के किनारे लगता है?**
3. **अंटार्कटिका में वर्ष 1982 में स्थापित भारत के प्रमि बेस का नाम क्या था?**
4. **हिमाचल प्रदेश में सबसे बड़ी कृत्रिम झील कौन-सी है?**
5. **हिमालय राष्ट्रीय उद्यान कहां स्थित है?**
6. **भारत में पहली रेल लाईन किस वर्ष में प्रारम्भ हुई थी?**
7. **हृदय में रक्त को शरीर के अन्य भाग तक ले जाने वाली नालियों के जाल को क्या कहते हैं?**
8. **गांधीनगर किस भारतीय राज्य की राजधानी है?**
9. **किस जानवर के फिंगर प्रिंट्स मनुष्यों से मिलते हैं?**
10. **ब्रिटेन में जन्मी महिला, जिसने स्वतंत्रता पूर्व भारतीयों में राष्ट्रप्रेम की भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?**

Registration/Admission Open for Classes IV to X

Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only

A CULTURE ORIENTED ENGLISH MEDIUM SCHOOL

(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)

Run By: Himachal Shiksha Samiti Shimla,

(A State unit of Vidya Bharti)

S.S.N. PUBLIC SCHOOL

KUMARHATTI

LOCATION: The complex is situated on Barog bye-pass Road. It is less than 2 Km. from KUMARHATTI.

Managed By:
Jindal Charitable Trust
Nabha (Panjab)
01765-326661

J.K. Sharma
Principal
Ph. : 01792-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

मातृवन्दना विशेषांक

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

विज्ञापन दरें

पूर्ण पृष्ठ रंगीन	:	₹20,000
पूर्ण पृष्ठ श्वेत-श्याम	:	₹10,000
आधा पृष्ठ श्वेत-श्याम	:	₹6,000
चौथाई पृष्ठ	:	₹3,000

HP/48/SML (upto 31-12-2011) Postage Paid in Advance RNI No. HPHIN/2001/04280

वक्त बदलता है,
अलफाज बदलते हैं
बदलते वक्त में
मजबूती का नया नाम

देवभूमि सरिया

STEEL CHEST

TMT STEEL BARS MS ANGLES
*MS CHANNELS *MS FLATS

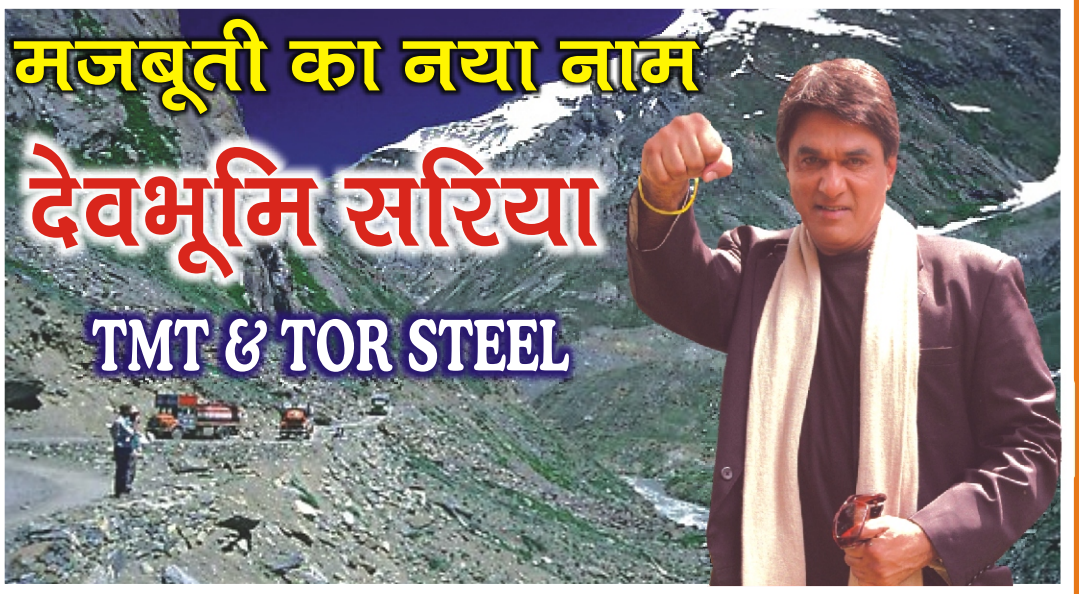

NALAGARH STEEL ROLLING MILLS PVT. LTD.

Works : Village Dadi Kaniya, Nalagarh Phone : 01795-220110, 220173
Mobile : 092165-03217, 98160-87410, 98160-34959, 098162-87410

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला - 171 009, से प्रकाशित।